53 वर्ष पुराना दैनिक समाचार पत्र | पंजीयक-पंजीयन संख्या-25059/73(79) | डाक पंजीकरण संख्या UP/BR-195/2022-24 | Web : muzaffarnagarbulletin.co.in | यह मुज़फ़्फ़रनगर है...

न्यूनतम 25.8°c अधिकतम 37.6 °c

मुज़फ़्फ़रनगर बुलेटिन

सम्पर्क सूत्र : 9368549219, 8077929606 | संस्थापक : स्व. उत्तम चन्द्र शर्मा | रोजाना आपकी सुबह की चाय पर

सूर्योदय - 5:25, सूर्यास्त - 7:05 | वर्ष : 53/ अंक : 135 | शनिवार, 17 मई 2025 | ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, पंचमी | सम्वत् 2082 | मूल्य 3 रुपये | कुल पृष्ठ-4

जय हिन्द की सेना.....
जय हिन्द की सेना.....

अमृतवाणी

सपना हमेशा बड़े से बड़ा देखो, चांद नहीं मिला तो क्या, आसमान तक तो पहुंचोगे।

भारतीय सेना की वीरता का लोहा दुनिया ने माना : सूर्य प्रताप शाही

दर्दनाक हादसा : ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक से भिड़ी कार, पति-पत्नी सहित 3 की मौत

शाहपुर, 16 मई (बु.)। शाहपुर-मुजफ्फरनगर मार्ग पर किनोनी गेट के पास एक हृदय विदारक सड़क दुर्घटना में तीन लोगों की मौत गई, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दर्दनाक हादसा तब हुआ, जब एक तेज गति से आ रही कार ने आगे चल रहे ट्रक को ओवरटेक करने के प्रयास में सामने से आ रही एक मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गई और दूसरी तरफ जा गिरी।

थानाक्षेत्र के नया गांव मंधेड़ा निवासी सुरेंद्र अपने परिवार के सदस्यों के साथ कार में सवार होकर गांव में हुए एक विवाद की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए शाहपुर थाने जा रहा था। जैसे ही उसकी कार किनोनी गेट के पास पहुंची, कार चालक ने आगे चल रहे ट्रक को ओवरटेक करने की कोशिश की। इसी दौरान कार सामने से आ रही एक मोटरसाइकिल टक्करा गई। इस टक्कर में मोटरसाइकिल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और कार पलटकर सड़क के दूसरी ओर गिर गई। इस दुर्घटना में मोटर साइकिल सवार कपिल (30 वर्ष) थाना बुढ़ाना के गांव खानपुर निवासी ने मौके पर दम तोड़ दिया। उसकी पत्नी ममतेश सहित कार सवार सुरेंद्र उसकी पत्नी रमेशो व शुभम व दीपक गंभीर रूप से घायल हो गईं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गम्भीर घायलों को जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया, जहां उपचार के दौरान मृतक कपिल की पत्नी ममतेश के अलावा कार सवार रमेशो की मौत हो गई। कार सवार गम्भीर घायल सुरेंद्र, शुभम और दीपक का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। घटना से मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। पुलिस ने तीनों मृतकों के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। एसएसआई बालिस्टर त्यागी और साँझक चौकी के उपनिरीक्षक विकास कुमार ने क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाकर यातायात को सुचारू रूप से चालू करवाया। इस दुःखद घटना से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है।

फिर बौने पड़े भाजपाई, अधिकारियों के दरबार में शायद नहीं हो सकी सुनवाई

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। परिवार के सामने अपमानित होने के बाद भी जिले के वरिष्ठ भाजपाई अपने ही अनुसूचित मोर्चा के जिलाध्यक्ष अजय सागर को न्याय दिलाने में चौबीस घंटे बाद तक भी सफल नहीं हो पाए। माना तो यही जा रहा है कि फिर एक बार अनुसूचित मोर्चा के जिलाध्यक्ष को भी समझौते का पाठ पढ़ाकर उन्हें आराम से इंतजार करने का आश्वासन दिया गया है। सूत्रों की माने तो अभी एसएसपी साहब बाहर हैं, ऐसे में किस तरह से फोन से एसएसपी से वार्ता की जाए, भाजपाइयों के लिए यह बहुत बड़ी विड़म्बना है। बताया जाता है कि जब एसएसपी साहब शहर में वापस आ जाएंगे, तभी कुछ हो पाया तो हो जाएगा नहीं तो फिर एक बार मामला रफा-दफा हो जाएगा। फिलहाल राजनीतिक गलियारों में तरह तरह की चर्चाएं व्याप्त हैं और आने वाले समय में जिले में भाजपा का भविष्य क्या होगा, इस पर कयास लगाए जा रहे हैं। अब यह तो भाजपा ही जानें कि भाजपा का भविष्य क्या होगा, फिलहाल घटना के 24 घंटे बाद भी अपनी ही सत्ता में अपने ही जिलाध्यक्ष के साथ बदसलूकी करने वाले सब इंस्पेक्टर का पत्ता तक नहीं हिल सका।

फाइल फोटो

पूजा करने मंदिर जा रहे दंपति की सड़क दुर्घटना में मौत

- दिल्ली-पौड़ी राजमार्ग पर मीरापुर के गांव सिखरेड़ा में हुआ हादसा
- अनियंत्रित ट्रक ने मारी दम्पत्ति को टक्कर

मीरापुर, 16 मई (बु.)। दिल्ली-पौड़ी राजमार्ग पर गांव सिखरेड़ा में पूजा करने मंदिर जा रहे दंपति को सड़क पार करते अनियंत्रित ट्रक ने टक्कर मार दी, जिससे पति-पत्नी दोनों की मौत हो गई। ट्रक चालक ट्रक छोड़कर फरार हो गया। शुक्रवार की सुबह करीब साढ़े चार बजे सिखरेड़ा निवासी बालेंद्र (38) अपनी पत्नी कामेश (34) के साथ प्रतिदिन की भांति गांव में दिल्ली-पौड़ी राजमार्ग पर सड़क के दूसरी तरफ स्थित शिव मंदिर में पूजा करने जा रहा था। इस दौरान दिल्ली- पौड़ी राजमार्ग को पार करते समय अचानक बिजनौर की ओर से तेज गति से आए एक अनियंत्रित ट्रक ने दोनों को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयंकर थी कि महिला कामेश की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बालेंद्र गंभीररूप से घायल हो गया। टक्कर की आवाज सुनकर मौके पर पहुँचे ग्रामीणों ने एम्बूलेंस व पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घायल को उपचार के लिए जिला अस्पताल भिजवाया तथा कामेश के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उधर गंभीर हालत के चलते चिकित्सकों ने बालेन्द्र को मेरठ रैफर कर दिया। जहाँ उपचार के दौरान कुछ घंटे बाद मेरठ में बालेंद्र की भी मौत हो गई। एक साथ दो मौत होने से गांव में मातम छा गया। पुलिस ने बालेन्द्र के शव को भी पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शाम मृतक दम्पति के शव गांव पहुँचे, जहाँ देर शाम करीब सात बजे गमगीन माहौल में दोनों के शवों का अंतिम संस्कार किया गया। मृतक बालेन्द्र के पिता भोपाल ने अज्ञात ट्रक चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया।

मीरापुर में सड़क दुर्घटना में मृत दम्पति का फाइल फोटो व विलाप करते परिजन

मजदूरी पर जाने से पहले मंदिर जाते थे दोनों पति-पत्नी

मीरापुर, 16 मई (बु.)। ग्रामीणों के अनुसार बालेंद्र मेहनत मजदूरी करके परिवार का पालन करता था तथा मृतक के एक पुत्री रानी व पुत्र भारती है।ग्रामीणों के अनुसार बालेन्द्र व उसकी पत्नी कामेश दोनों सुबह के समय पहले मंदिर जाते थे तथा उसके बाद सड़क किनारे टहलते थे। बाद में बालेन्द्र काम पर जाता था।

बच्चों व परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल

मीरापुर, 16 मई (बु.)। पिता बालेन्द्र व माँ कामेश की मौत की सूचना मिलते ही बच्चों पर मानो कहर सा टूट पड़ा हो। मृतक दम्पति के दोनों बच्चों व परिवार के अन्य सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है। वहीं एक साथ दो मौत होने से गांव में भी मातम छाया हुआ है। ग्रामीणों के अनुसार बालेन्द्र व उसकी पत्नी कामेश बहुत ही मधुर व्यक्तित्व के थे।

जीएसटी छापेमारी में जयराज सोप फैक्ट्री पर मिली विसंगितियां

साढ़े छह लाख का सामान जब्त, वसूला 2.18 लाख रुपए का अर्थदंड

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। स्टेट जीएसटी विभाग की ओर से जनपद में जीएसटी चोरी को लेकर शुरू किए चेकिंग अभियान के बीच शुक्रवार को भी छापेमारी जारी रही। इस दौरान जीएसटी विभाग की टीम ने नगर की बड़ी कार्रवाई करते हुए जयराज सोप फैक्ट्री में बड़ी चोरी पकड़ी है। विभाग की इस छापेमारी से जिले में अवैध रूप से कारोबार करने वाले कारोबारियों में दहशत का माहौल दिखाई देने लगा है। नगर में की गई इस कार्रवाई के बीच जीएसटी विभाग अधिकारियों ने टीम के साथ छापेमारी करते हुए यहां पर खरीद और ब्रिकी किए जाने के लेनदेन में बड़ी विसंगतियां पकड़ी है। इस बीच विभागीय टीम की ओर से हुई कार्रवाई में 6,45,325 रुपये का माल जब्त किया गया। इसके साथ जीएसटी चोरी मिलने पर 2 लाख 18 हजार 444 रुपए का मौके पर चालान बनाकर अर्थदंड जमा कराया है। स्टेट जीएसटी विभाग के ज्वाइंट कमिश्नर सिद्धेश दीक्षित के नेतृत्व में शुक्रवार को नगर में साबुन का कारोबार करने वाले मै. जयराज सोप फैक्ट्री में छापेमारी की गई। इस दौरान विभाग के डिप्टी कमिश्नर मनोज शुक्ल के नेतृत्व में गठित टीम ने नगरीय क्षेत्र में संचालित जयराज सोप फैक्ट्री पर छापेमारी की। टीम द्वारा की गई कार्रवाई से क्षेत्र में हड़कंप मचा रहा। कई घंटे तक यहां पर मिले माल के बिलों और अन्य लेखे-जोखे के दस्तावेजों की जांच किए जाने के साथ टीम ने कच्चे माल और बिक्री से जुड़े बिलों का मिलान किया। टीम ने इस दौरान यहां निर्मित माल के लेन-देन में बहुत बड़ी विसंगतियां पकड़ी। टीम ने इस दौरान सामान की सूची जब्त करने के साथ ही अन्य जरुरी दस्तावेज अपने कब्जे में ले लिए, ताकि जांच की जा सकें।

इन्होंने कहा-

स्टेट जीएसटी के ज्वाइंट कमिश्नर सिद्धेश दीक्षित ने बताया कि शुक्रवार को विभागीय टीम ने मै. जयराज सोप फैक्ट्री में कई घंटे की जांच पड़ताल में यहां बड़ी गड़बड़ियां मिली हैं, जिसके आधार पर टीम ने 6,45,325 रुपये के निर्मित माल के साथ कच्चे माल को अभिग्रहित करने के साथ ही अर्थदंड मद में दो लाख 18 हजार 444 रुपये की चालान कार्रवाई की है। उन्होंने बताया कि विभाग की नजर रेलवे से ट्रांसपोर्ट के साथ जनपद के होने वाले हर कारोबार पर है, ऐसे में कहीं भी खामियां होने के संदेह पर विभागीय टीम तत्पर है, ताकि जनपद में जीएसटी चोरी रोकने के साथ राजस्व में वृद्धि हो सके।

आस्तीन के सांप को कैराना लेकर पहुंची सीआईए टीम, खंगाला मकान

- सीआईए टीम ने आरोपी के आवास पर करीब डेढ़ घंटे तक चलाया सर्च अभियान
- नोमान इलाही के मकान से बरामद किए पासपोर्ट, आधार कार्ड, और जरूरी कागजात

कैराना, 16 मई (बु.)। आपको बता दें कि गत् मंगलवार को हरियाणा राज्य के पानीपत जनपद की क्राइम इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (सीआईए प्रथम) की टीम ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में कैराना कस्बे के मौहल्ला बेगमपुरा निवासी नौमान इलाही को गिरफ्तार किया था। नौमान पिछले करीब चार पांच माह से पानीपत में अपनी बहन जीनत के पास रहकर एक फैक्ट्री में सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहा था, यह आरोपी बड़ी शातिर तरीके से जासूसी कर रहा था। उधर उक्त प्रकरण में पकड़े गए आरोपी के विरुद्ध पानीपत के सेक्टर-29 थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था, जिसके बाद टीम ने आरोपी को एक सप्ताह के कस्टडी रिमांड ले रखा है। शुक्रवार को सीआईए प्रथम की आधा दर्जन से अधिक सदस्यों की टीम एसआई देवराज सिंह के नेतृत्व में आरोपी नौमान को साथ लेकर कैराना कोतवाली पहुंची, जहां पर आमद दर्ज कराई, बाद में टीम स्थानीय पुलिस को साथ लेकर आरोपी के मौहल्ला बेगमपुरा स्थित बंद पड़े मकान पर पहुंची। टीम ने आरोपी के मकान को खुलवाकर तलाशी ली। इतना ही नहीं टीम करीब एक-डेढ़ घंटे तक आरोपी के मकान पर जुटी रही। इस दौरान आरोपी के मकान से टीम को पासपोर्ट, आधार कार्ड, फोटो व अन्य दस्तावेज बरामद हुए हैं। टीम ने मोहल्ले के लोगों से भी आरोपी के सम्बंध में कई जानकारी हासिल की। बताया जा रहा है कि सीआईए की टीम ने आरोपी की निशानदेही पर मोहल्ले के ही एक मकान से भी कुछ जरूरी कागजात बरामद करने का दावा किया है। हालांकि इसकी अधिकारिक तौर पर कोई भी पुष्टि नहीं की गई। उधर टीम में शामिल पुलिस अधिकारियों ने कोई भी जानकारी नहीं दी। इसके बाद सीआईए प्रथम टीम आरोपी को साथ लेकर वापिस लौट गई। टीम के सर्च अभियान के दौरान मोहल्ले के लोगो में जहां हड़कंप मचा देखा गया, वहीं लोग अपनी अपनी छतों और मकान की खिड़कियों से यह सर्च अभियान चलाते रहे।

पहलगाम हमले के बाद श्रीनगर जाने की थी प्लानिंग

कैराना। सूत्रों की मानें तो सीआईए प्रथम की जांच में यह खुलासा हुआ है कि जिस वक्त भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर चलाया जा रहा था, उसी दौरान नौमान को श्रीनगर भेजने की प्लानिंग थी। उसके मोबाइल से मिली व्हाट्सअप चैट में यह खुलासा हुआ कि उसे सेना से जुड़ी गतिविधियों की जानकारी श्रीनगर से भेजने की बात कही गई थी। इसके बदले में नौमान को हर सूचना के लिए मोटी रकम देने और आर्थिक रूप से माला-माल करने का लालच दिया गया था। आरोपी के पास पाकिस्तान से खाते में पैसा आता था, यह अभी साफ नहीं हो पाया है, लेकिन कैराना का इकबाल उर्फ काना के आरोपी संपर्क में था, यह टीम जांच कर खुलासा कर चुकी है।

अलर्ट मोड़ पर खुफिया विभाग, टीम के सर्च अभियान के दौरान चौकन्ना रहा खुफिया विभाग

कैराना। आरोपी नौमान की गिरफ्तारी के बाद से ही एलआईयू,आईबी व साइबर विभाग सहित अन्य टीमें अलर्ट नजर आ रही है। मामला देश की सुरक्षा से जुड़ा होने के कारण लोकल खुफिया तंत्र स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर गुप्त तरीके से आरोपी युवक की कुंडली खंगालने में जुटा हुआ है। पुलिस टीम जांच कर रही है कि आरोपी युवक कैराना में किन-किन लोगो के सम्पर्क में रहा है। हालांकि सूत्रों की मानें तो सीआईए प्रथम की टीम की जांच के दौरान कई लोगों के नाम सामने आए हैं, लेकिन अब आरोपी की जब जांच पूरी हो जाए, तो बाद में टीम किस किससे पूछताछ करती है, यह तो आगे की कार्यवाही के बाद ही पता चल सकेगा।

घर से लापता मनोज का शव रजबाहे के पास पड़ा मिला

जानसठ, 16 मई (बु.)। क्षेत्र के गांव खेड़ा चौगावा में पांच दिनों से घर से लापता मनोज का शव जंगल में रजबाहे के पास पड़ा मिला। पुलिस के मुताबिक मृतक नशा करने का आदी था। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। कोतवाली प्रभारी राजीव शर्मा ने बताया कि ग्रामीणों के अनुसार गांव गांव खेड़ा चौगावा निवासी 45 वर्षीय मनोज पुत्र वेदपाल नशा करने का आदी था। वह अक्सर अपने घर से कई-कई दिन तक गायब रहता था। मनोज सोमवार से घर से लापता था। स्वजन ने उसको काफी जगह तलाश किया, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चल सका। पुलिस का कहना है कि ग्रामीणों ने बताया कि मनोज नशा करने के लिए अपने खेतों में ही पड़ा रहता था। शुक्रवार की सुबह खेतों में जाने वाले किसानों ने मनोज का शव रजबाहे के पास पड़ा देखा। शव मिलने की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

युवक का शव फार्म हाउस पर बने हौज में पड़ा मिलने से कोहराम

खतौली, 16 (बु.)। युवक का शव अपने कुत्ता फार्म के पानी के हौज में पड़ा मिलने से परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कोतवाली क्षेत्र के गांव रसूलपुर कैलोरा निवासी अनुज पुत्र यशपाल ने अपने खेत में कुत्ता फार्म हाउस बना रखा है, बताया जाता है कि अनुज रात में फार्म हाउस में ही सोता है। बीते दिवस भी अनुज रात्रि में घर से फार्म पर गया, परन्तु सुबह देर तक जब अनुज फार्म से घर नहीं पहुंचा, तो परिजन चिंतित हुए और पिता यशपाल जब खेत में बने फार्म हाउस पर पहुंचे, तो अपने पुत्र यशपाल का शव फार्म के पानी के हौज में पड़ा देखकर उनके होश उड़ गए। कुछ समय में पानी के हौज में अनुज का शव पड़ा होने की सूचना गांव में आग की तरह फैल गयी तथा 35 वर्षीय अनुज की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया। ग्रामीणों की सूचना पर कोतवाली पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल के दौरान मृतक का मोबाइल भी पानी की हौज में पड़ा मिला। परिजनों की मौजूदगी में पुलिस द्वारा पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया गया। दबी जुबान में ग्रामीणों द्वारा अनुज की हत्या किये जाने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगामी कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। थाना क्षेत्र के नसीरपुर गांव में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी। पुलिस को महिला द्वारा आत्महत्या किए जाने की जानकारी मिली थी। तितावी थानाध्यक्ष डॉ. मानवेन्द्र सिंह भाटी ने बताया कि महिला के द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या की सूचना मिली थी, जिसके बाद मौके पर जाकर मामले की जानकारी ली गयी। बताया जाता है कि महिला काफी समय से बीमार थी, जिसके चलते उसकी मृत्यु हुई है। मायके और ससुरालियों ने मिलकर महिला का बिना कोई कार्यवाही कराये अंतिम संस्कार कर दिया था।

युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। थाना सिविल लाइन क्षेत्र में चौधरी चरणसिंह मार्केट परिसर में एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जाता है कि युवक काम न मिलने के कारण पिछले काफी समय से अवसाद में चल रहा था, जिस कारण उसने ऐसा किया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। चौधरी चरण सिंह मार्केट परिसर में रोहाना खुर्द निवासी 23 वर्षीय अविवाहित अरुण परिवार के साथ रहता है। एसआई प्रशांत गिरी ने बताया कि अरुण के परिवार के लोग घर से बाहर गए हुए थे। इसी दौरान अरुण ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों के लौटने पर उन्होंने अरुण का शव फंदे से लटका देखकर पुलिस को मामले की जानकारी दी। पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। एसआई ने बताया कि काम न मिलने के कारण युवक पिछले कुछ समय से अवसाद में चल रहा था, जिसके चलते उसने उसने आत्महत्या की है। हादसे से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

डीजीपी ने रेप के आरोपी राहुल श्रीवास्तव को पुलिस महानिदेशक का जनसंपर्क अधिकारी बनाया, यूपी में 48 पीपीएस अधिकारियों को मिली नई जिम्मेदारी

लखनऊ, 16 मई (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में लगातार तबादलों का सिलसिला जारी है। गुरुवार को बड़े स्तर पर पीसीएस अधिकारियों के बाद अब पीपीएस अधिकारियों के तबादले भी कर दिए गए हैं। शुक्रवार को करीब 48 अपर पुलिस अधीक्षक रैंक के अधिकारियों को इधर से उधर कर दिया गया है। तबादलों के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक और चर्चित पुलिस अधिकारी राहुल श्रीवास्तव को एक बार फिर बड़ी जिम्मेदारी मिल गई है। राहुल श्रीवास्तव को पुलिस महानिदेशक का जनसंपर्क अधिकारी बनाया गया है। इसके साथ ही अखिलेश भदौरिया को अमरोहा का अपर पुलिस अधीक्षक नियुक्त किया गया है, जबकि राजीव कुमार सिंह द्वितीय को मथुरा नगर का अपर पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। साथ ही प्रभात कुमार प्रथम को अपर पुलिस अधीक्षक पुलिस मुख्यालय उप्र. लखनऊ, गोपीनाथ सोनी को अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्रीय अभिसूचना बरेली और डॉ. अरविंद कुमार को अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण झांसी बनाया गया है। राजेश कुमार श्रीवास्तव को अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी संभल, ममता रानी चौधरी को लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट में अपर पुलिस उपायुक्त बनाया गया है। इसके अलावा रंजन सिंह को अपर पुलिस उपायुक्त वाराणसी कमिश्नरेट और डॉ. राजीव कुमार सिंह को अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्रीय अभिसूचना मेरठ की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राम अर्ज को अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्रीय अभिसूचना अयोध्या, सुबोध कुमार जायसवाल को उपसेनानायक 35वीं वाहिनी पीएसी लखनऊ, डॉ. प्रवीण रंजन सिंह को गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट में अपर पुलिस उपायुक्त और दुर्गेश कुमार सिंह को अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी सीतापुर, शैलेन्द्र लाल को अपर पुलिस अधीक्षक अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी प्रतापगढ़, अखिलेश नारायण सिंह को अपर पुलिस अधीक्षक पुलिस मुख्यालय लखनऊ, रितेश कुमार सिंह को अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी बाराबंकी और निवेश कटिहार को अपर पुलिस अधीक्षक कुशीनगर बनाया गया है।

शाहपुर क्षेत्र के गांव पलड़ी में जिला पंचायत द्वारा कराया 65 लाख के विकास कार्यों का उद्घाटन

शाहपुर, 16 मई (बु.)। क्षेत्र के गांव पलड़ी में जिला पंचायत द्वारा कराए गए आधा दर्जन से अधिक कार्यों का उद्घाटन जिला पंचायत सदस्य विजय चौधरी व अन्य द्वारा किया गया। सभी कार्यों की अनुमानित लागत लगभग 65 लाख रुपये हैं। शाहपुर क्षेत्र के गांव पलड़ी में जिला पंचायत विभाग द्वारा कराएं गए लगभग 65 लाख रुपये लागत के विकास कार्यों का विधिवत रूप से उद्घघाटन किया गया। शुक्रवार को देर शाम गांव में आधा दर्जन से अधिक विकास कार्यों का उद्घाटन करने के बाद जिला पंचायत सदस्य विजय चौधरी ने बताया कि पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री डॉ. संजीव बालियान के मार्गदर्शन में गांव पलड़ी में जिन विकास कार्यों का उद्घाटन किया गया, उनमें रठान पर मिट्टी खड़ंजा जिसकी लम्बाई 350 मीटर, लागत साढ़े छह लाख, पलड़ी पानी टंकी से भट्टे की ओर मिट्टी खड़ंजा लम्बाई 300 मीटर, लागत छह लाख, सैनी एग्रो फार्म से चौराहे तक मिट्टी खड़ंजा लम्बाई 250 मीटर लागत पांच लाख, प्राचीन शिव मंदिर से खेतों को नाला निर्माण जिसकी लम्बाई 250 मीटर, लागत तेरह लाख, बीजू कश्यप के घर से मुख्य मार्ग तक आरसीसी लम्बाई 105 मीटर, जिसकी लागत तीन लाख, मंदिर पर इंटरलॉक कार्य लागत पांच लाख, रठान पर काली सड़क लागत 18 लाख रुपये, रठान पर आरसीसी 100 मीटर, लागत छह लाख रुपये का उद्घघाटन किया गया। इस दौरान सहकारी संघ के उप सभापति बाबूराम सैनी, नरेंद्र सैनी, धर्मपाल सैनी, सुशील सैनी, लाल्ला, सुंदर सैनी, बिरशपाल, जोनी बालियान, बृजपाल, छोटू सैनी, पंकज सैनी, मास्टर राजपाल सैनी, डॉ. नीटू सैनी, संजय सैनी, सुरेंद्र सैनी, मिंटू, सुन्दर मुनीम, अश्वनी मंडल अध्यक्ष, सुरेश कश्यप, राजा सैनी, अंकित, राजू, दीपक, आदि मौजूद रहे।

शाहपुर चेयरमैन अकरम कुरैशी ने बेहतरीन कार्य करने वाले कर्मचारियों को किया सम्मानित

- वेतन में वृद्धि करने की भी घोषणा - घनश्याम नामदेव बबलू की मुक्त कंठ से हुई प्रशंसा

शाहपुर, 16 मई (बु.)। नगर पंचायत अध्यक्ष हाजी अकरम कुरैशी ने पिछले महीने घोषणा की थी कि जो कर्मचारी अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे, उन्हें सम्मानित किया जाएगा। आज नगर पंचायत में सभासद गणों की मौजूदगी में लगातार अच्छा कार्य कर रहे कर्मचारियों को गिफ्ट देकर सम्मानित किया तथा उनके वेतन में भी वृद्धि करने के आदेश दिए गए। चेयरमैन हाजी अकरम कुरैशी ने कहा कि जो कर्मचारी आगे भी लगातार अच्छा कार्य करेंगे, उन्हें भी हर महीने सम्मानित किया जायेगा। इस दौरान सभासद मनोज सैनी, विशाल गर्ग, सतीश पाल, आसिफ सलमानी, बुद्ध प्रकाश, मनोज अरोरा उपस्थित रहे। नगर पंचायत शाहपुर में कार्यरत कर्मचारी घनश्याम नामदेव (बबलू)को उनकी कार्य शैली के लिए सम्मानित किया गया। उनके द्वारा नगर पंचायत में किए गए कार्य उत्तम हैं। अध्यक्ष हाजी अकरम कुरैशी से लेकर समस्त सभासद गणों के वे सबसे पसंदीदा कर्मचारी है। उनकी ईमानदारी, मेहनत व लगन को देखकर अध्यक्ष हाजी अकरम कुरैशी ने नगर पंचायत के ऑफिस स्टाफ पर उन्हें मॉनिटरिंग के लिए नियुक्त किया है। चेयरमैन हाजी अकरम भी उनकी बातों को अहमियत देते हैं, क्योंकि वह ऑफिस स्टाफ की पल-पल की जानकारी देते हैं। कुछ कर्मचारियों ने अध्यक्ष को बताया कि वह पूर्व अध्यक्ष के नजदीकी है, इसलिए उन्हें ऑफिस की जानकारी देना ठीक नहीं है, लेकिन अध्यक्ष हाजी अकरम कुरैशी ने सभी की बातों को दरकिनार करते हुए उन्हें पूर्ण जिम्मेदारी सौंपी, जिस पर वह आज तक खरे उतरे तथा सभी की बोलती बंद कर दी। घनश्याम नामदेव बबलू स्वयं बताते हैं कि वह अब नगर पंचायत में काम नहीं करना चाहते थे, लेकिन चेयरमैन हाजी अकरम कुरैशी के व्यवहार को देखकर वह नगर पंचायत से जुड़े रहे तथा कहते हैं कि जब तक चेयरमैन साहब रहेंगे, तब तक में कार्य करता रहूंगा अन्यथा मैं नगर पंचायत में अपनी सेवा समाप्त कर दूंगा ।

शाहपुर में सम्मानित किए गए मेधावी छात्र-छात्राएं

शाहपुर, 16 मई (बु.)। कस्बे की शिक्षण संस्था राज एकेडमी के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में मेधावी छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कस्बे की शिक्षण संस्था राज एकेडमी के संयुक्त वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में अतिथि एमको बैंक के चेयरमैन डॉ. के.सी. गोयल, समाजसेवी मनोज गुप्ता, व्यापारी नेता विश्वदीप गोयल, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राम नागर, भाजपा नेत्री गीता जैन, शिवचरण गर्ग, पूर्व चेयरमैन प्रमेश सैनी, वरिष्ठ भाजपा नेता श्यामपाल सिंघल भाई जी, सभासद आदिल खान ने हाल ही में यूपी बोर्ड के हाई स्कूल व इंटरमीडिएट के घोषित परीक्षा परिणाम में विद्यालय की मेधावी छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओतप्रोत मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अतिथियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले सभी छात्र-छात्राओं व अध्यापिकाओं को प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया। विद्यालय के अध्यक्ष अजय भार्गव, प्रबंधक अरविंद कुमार गुप्ता व प्रधानाचार्या उषा अस्थाना ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सानिया मिर्जा, रिंकी रानी, आदेश, अंजलि, ज्योति त्रिपाठी, ललिता शर्मा, तनु सैनी, बुशरा, सोनम सलमानी, भावना गोस्वामी, ममता पाल व दीपिका सैनी आदि का योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन फिजा राणा ने किया।

गोला-बारूद, नए लड़ाकू विमान, मिसाइलें और सबमरीन...

भारत कर रहा जंग की तैयारी! खर्च करेगा 50 हजार करोड़

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। भारत के ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को भारी नुकसान पहुंचाया है। इस ऑपरेशन के जरिए भारत ने पाक को अपनी ताकत का भी अंदाजा लगवा दिया है। इस बीच एक अहम खबर सामने आयी है। केंद्र सरकार रक्षा बजट बढ़ा सकती है। इससे सेना और ज्यादा मजबूत होगी। पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर से दहलाने के बाद केंद्र सरकार रक्षा बजट में 50,000 करोड़ रुपए बढ़ा सकती है। रक्षा मंत्रालय की ओर से सरकार को फंड बढ़ाने का प्रस्ताव दिया गया है, जिसे संसद के नवंबर-दिसंबर के दौरान शीतकालीन सत्र में मंजूरी मिल सकती है। एक रिपोर्ट में सरकारी सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि इस साल के अंत में पूरक बजट के माध्यम से अतिरिक्त धनराशि आवंटित किए जाने की उम्मीद है, जिससे संभवतः कुल रक्षा व्यय पहली बार 7 लाख करोड़ रुपये के पार चला जाएगा। 1 फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2025-26 के लिए केंद्रीय बजट में पहले ही रक्षा के लिए रिकॉर्ड 6.81 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किए थे। यह आंकड़ा पिछले वर्ष के 6.22 लाख करोड़ रुपये से 9.2 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है। यदि अतिरिक्त आवंटन को मंजूरी मिल जाती है, तो यह सैन्य आधुनिकीकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सरकार की रणनीतिक प्राथमिकता को और अधिक रेखांकित करेगा। सूत्रों ने बताया कि अतिरिक्त बजट को अनुसंधान और विकास, उन्नत हथियारों की खरीद, गोला-बारूद के स्टोर को बढ़ाने लगाया जा सकता है। भारत नए लड़ाकू विमान और मिसाइलों पर भी खर्च कर सकता है। इस प्रस्ताव को शीतकालीन सत्र के दौरान संसद की मंजूरी के लिए पेश किए जाने की संभावना है। 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल की शुरुआत से ही रक्षा खर्च में तेजी से बढ़ोतरी देखी गई है। 2014-15 में रक्षा मंत्रालय को 2.29 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। मौजूदा बजट न केवल इस आंकड़े को छोटा करता है, बल्कि सभी मंत्रालयों में सबसे बड़ा आवंटन भी दर्शाता है, जो राष्ट्रीय बजट का 13 प्रतिशत है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने भारतीय सेना के स्वदेशी रक्षा प्रणालियों को उन्नत तकनीकों के साथ एकीकृत करने की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। विशेष रूप से, इस ऑपरेशन ने भारत की एयर डिफेंस सिस्टम की ताकत को प्रदर्शित किया, जिसमें स्वदेशी आकाश मिसाइल प्रणाली भी शामिल है, जिसकी तुलना अक्सर इजरायल के आयरन डोम से की जाती है। इससे संबंधित एक घटनाक्रम में, भारत ने भार्गवस्त्र नामक एक नए ड्रोन-रोधी हथियार का भी परीक्षण किया। इसे 'हार्ड किल' मोड में संचालित करने वाले कम लागत वाले काउंटर-ड्रोन सिस्टम के रूप में डिजाइन किया गया है, यह हवाई खतरों को बेअसर करने के लिए माइक्रो-रॉकेट का उपयोग करता है। इस सिस्टम का इस सप्ताह की शुरुआत में ओडिशा के गोपालपुर में सीवर्ड फायरिंग रेंज में सफल परीक्षण किया गया था।

प्लॉट में पशु बांधने को लेकर विवाद, दो पक्षों में मारपीट, 5 लोगों पर केस दर्ज

चरथावल, 16 मई (बु.)। थाना क्षेत्र के बुड्ढाखेड़ा गांव में एक खाली प्लॉट में पशु बांधने को लेकर दो पड़ोसी परिवारों में विवाद हो गया। शनिवार को हुए इस विवाद में दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। मारपीट में कई लोग घायल हुए। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे पर हमलावर हैं और बीच-बचाव करने वालों को भी नहीं छोड़ा गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। प्रारंभिक जांच के बाद एक पक्ष के भजन पुत्र देवीचंद, सागर पुत्र भजन, गोवर्धन पुत्र देवीचंद, शुभम पुत्र गोवर्धन और लक्ष्मण के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। बाद में दूसरे पक्ष पर भी मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस ने बताया कि घटना की जांच जारी है। दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

भारत के हाथ लगी तुर्किये की नस! खेत में मिला जिंदा ड्रोन

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। भारत के खिलाफ पाकिस्तान का साथ देने वाले तुर्किये का विरोध लगातार जारी है। इस बीच अब भारत को तुर्किये की कमजोर नस मिली है, जो तुर्किये की भूमिका को साफ उजागर करने वाली है। भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष में तुर्किये ने पाकिस्तान की मदद की थी। पाकिस्तान ने तुर्किये के ड्रोनों से भारत पर हमले की कोशिश की। सेना द्वारा इस बात की जानकारी दिए जाने के बाद से भारत में तुर्किये के विरोध का दौर शुरू हो गया है। बॉयकॉड तुर्किये की मुहिम लगातार तेज होती नजर आ रही है। जेएनयू-जामिया सहित भारत की कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने तुर्किये के साथ समाप्त कर दिया है। भारत में काम कर रही तुर्किये की फर्म सेलेबी का सिक्योरिटी क्लियरेंस रद्द कर दिया गया है। लोग तुर्किये की यात्रा रद्द कर रहे हैं। कारोबारियों ने तुर्किये के फल-मार्बल आदि का आयात करने का फैसला लिया है। इस बीच अब भारत के हाथ तुर्किये की कमजोर नस लगी है, जिससे भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष में तुर्किये का पाकिस्तान को समर्थन देने की बात पक्के तौर पर साबित होगी। दरअसल भारत को तुर्किये का एक जिंदा ड्रोन मिला है। यह ड्रोन पाकिस्तान सीमा से सटे राजस्थान के अनूपगढ़ में मिला है। तुर्किये का यह ड्रोन जहां मिला, वहां से पाकिस्तान बॉर्डर की दूरी मात्र 12 किलोमीटर है। खास बात यह है कि अनूपगढ़ की एक नर्सरी में मिला पाकिस्तान द्वारा भेजा गया तुर्किये का यह ड्रोन सही सलामत मिला है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शायद उसकी बैटरी डिस्चार्ज हो गई थी, इसलिए वह लैंड हो गया। ड्रोन में विस्फोटक भी मौजूद था, जिसे सेना ने बड़ी सावधानीपूर्वक अपने कब्जे में लिया। अब इस ड्रोन का इस्तेमाल रिवर्स इंजीनियरिंग के लिए किया जा सकता है। साथ ही यह ड्रोन सबूत के तौर पर भी रखा जा सकता है। मिली जानकारी के अनुसार अनूपगढ़ के गांव 12ए में वन विभाग की नर्सली में स्थानीय ग्रामीणों ने ड्रोन नुमा चीज देखी तो तुरंत स्थानीय अधिकारियों को सूचित किया, जिसके बाद अनूपगढ़ के थानाधिकारी ईश्वर जांगिड़ पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और बीएसएफ को सूचना दी। यह ड्रोन 5 से 7 फुट लंबा था, जिसका कैमरा मॉड्यूल टूटा हुआ और अलग था। स्थानीय थानाधिकारी ने कहा कि ड्रोन को जब्त कर लिया गया है। इसे फोरेंसिक और तकनीकी विश्लेषण के लिए भेजा जाएगा, ताकि उसके बारे में पता लगाया जा सके। रक्षा सूत्रों ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रणनीतिक महत्व को देखते हुए वहां ड्रोन नुमा चीज मिलना गंभीर है। मालूम हो कि ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाए पाकिस्तान ने 8 और 9 मई की रात भारत के 36 जगहों पर 300 से 400 तुर्किये ड्रोन के जरिए हमले की कोशिश की थी। पाकिस्तान ने तुर्किये के अस्सिगार्ड सोंगर ड्रोन भारत में भेजे थे। यह तुर्किये का पहला स्वदेशी सशस्त्र ड्रोन सिस्टम कहा जाता है। अब देखना है कि राजस्थान के अनूपगढ़ में मिला जिंदा ड्रोन कौन सा है? यह ड्रोन कितना घातक है? रिवर्स इंजीनियरिंग के जरिए भारत इन सब चीजों की जानकारी जुटाई जाएगी।

फसल विविधीकरण अपनाकर, कृषक अपनी आय बढ़ाये ड्रिप सिंचाई विधि अपनाकर, पानी और उर्वरक बचायें : जिलाधिकारी

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बुस.)। ग्राम-नाईपुरा, विकासखण्ड जानसठ के कृषक जगराज सिंह के खेत पर डीएम द्वारा भ्रमण किया गया। जगराज सिंह कुल लगभग 16 एकड़ में खेती की जा रही है, जिसमें 5 एकड़ में मक्का, लगभग 7 एकड तरबूज एंव खरबूज की खेती, 4 एकड़ खेत में हरी मिर्च की खेती कर रहे हैं। जगराज सिंह के खेत पर उद्यान विभाग द्वारा अनुदानित ड्रिप सिस्टम लगा हुआ है। कृषि विभाग द्वारा पीएम कुसुम योजना के अन्तर्गत 5 एचपी का सोलर पम्प स्थापित है। श्री सिंह ने अवगत कराया कि प्रति एकड़ तरबूज / खरबूजे से हमें लगभग 50 हजार का लाभ प्राप्त होता है। इसके बाद बाद इसी खेत में खरीफ मक्का उत्पादन कर लगभग 50 हजार रुपए प्रति एकड़ बचत होती है। पुनः रबी मौसम में इसी खेत में सब्जी का उत्पादन कर लगभग 50 हजार रुपए की बचत होती है। इस प्रकार वर्ष में एक एकड़ से 1 से 1.50 लाख रुपए की बचत होती है। इसी प्रकार मक्का, आलू और मेथी का उत्पादन कर प्रति एकड़ 1.50 लाख रुपए तक का वार्षिक लाभ प्राप्त कर रहे है। इनके द्वारा बताया गया कि ड्रिप सिंचाई के साथ उर्वरक का उपयोग करते है, जिससे उर्वरक खपत में बचत होती है। अतः कुल लागत में कमी होती है। श्री सिंह के फार्म पर डीएम द्वारा ड्रिप प्रणाली एव वर्मी कम्पोस्ट यूनिट का भी निरीक्षण किया गया, यह देखकर डीएम खुश हुये और किसान की सराहना की गई। कृषक द्वारा बताया गया कि वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग खेती के लिए कर रहे हैं, जिससे रसायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हुई एवं स्वस्थ खाद्यान्न प्राप्त हो रहा है। डीएम द्वारा कृषक जगराज सिंह को सुझाव दिया गया कि आप अपने क्षेत्र में इसी प्रकार से कम से कम 100 कृषकों को प्रेरित करें। कृषक द्वारा अवगत कराया गया कि क्षेत्र के लगभग 8-10 कृषकों द्वारा सैकड़ों एकड़ मक्का, मिर्च, तरबूज एव खरबूज की खेती की जा रही है। डीएम द्वारा उप निदेशक कृषि को निर्देशित किया गया प्रगतिशील कृषक को मेरे द्वारा सम्मानित कराना सुनिश्चित करें।

तालिबान के साथ भारत के नए कूटनीतिक संबंधों का आगाज, जयशंकर ने अफगान विदेश मन्त्री से पहली बार की बातचीत

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने गुरुवार को अफगानिस्तान के तालिबान शासित शासन के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी से पहली बार आधिकारिक बातचीत की। इस बातचीत में भारत-अफगान पारंपरिक मित्रता, विकास सहयोग और हालिया पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा जैसे मुद्दे प्रमुख रूप से उठे। इस ऐतिहासिक बातचीत में जयशंकर ने अफगान जनता के साथ भारत की पारंपरिक मित्रता को रेखांकित करते हुए उनके विकास की जरूरतों के लिए निरंतर समर्थन की प्रतिबद्धता दोहराई। गौर करने वाली बात यह है कि भारत ने अभी तक तालिबान शासन को आधिकारिक मान्यता नहीं दी है। यह वार्ता ऐसे समय पर हुई है जब तालिबान सरकार ने पहलगाम हमले की सार्वजनिक तौर पर निंदा की थी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 7 मई को हुए इस आतंकी हमले में 26 लोगों की जान गई थी, जिसमें पाक समर्थित आतंकी शामिल थे। बातचीत के बाद जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा- कार्यवाहक अफगान विदेश मंत्री मावलवी अमीर खान मुत्ताकी से अच्छी बातचीत हुई। पहलगाम आतंकी हमले की निंदा करने करने के लिए उनका आभार। अफगान जनता के साथ हमारी पारंपरिक मित्रता और विकास की हमारी प्रतिबद्धता को दोहराया। आगे सहयोग बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की। यह पहली बार है जब भारत और तालिबान के बीच राजनीतिक स्तर पर आधिकारिक संवाद हुआ है, जबकि भारत ने अब तक तालिबान सरकार को औपचारिक मान्यता नहीं दी है। इससे पहले जनवरी 2025 में भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने दुबई में मुत्ताकी से मुलाकात की थी। इससे पहले ऐसा संपर्क वर्ष 1999-2000 में देखा गया था, जब भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने कंधार विमान अपहरण कांड के दौरान तालिबान के तत्कालीन विदेश मंत्री वकील अहमद मुत्तवाकिल से बातचीत की थी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह वार्ता भारत की रणनीतिक कूटनीति का हिस्सा है, जिसमें वह तालिबान से सीधे संवाद बनाकर अफगान जनता के साथ संपर्क और क्षेत्रीय स्थिरता को साधने की कोशिश कर रहा है। भारत का यह कदम न केवल अफगान जनता के प्रति उसकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि क्षेत्र में बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों में उसकी सक्रिय भूमिका को भी रेखांकित करता है।

भारत बना रहा ऐसा प्लान, पाकिस्तान में मच जाएगा हड़कंप!

वॉटर स्ट्राइक के बाद अब लगेगा 'बिजली का झटका'

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। भारत सरकार की ओर से सिंधु जल संधि को स्थगित करने के बाद पाकिस्तान की जनता में हड़कंप मचा हुआ है। पाकिस्तान 80 फीसदी खेती के लिए सिंधु नदी के पानी पर निर्भर है। भारत नए सिंधु प्रोजेक्ट के तहत पाकिस्तान का पानी रोकने वाला है, जिससे वहां की आवाम डरी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक 22 अप्रैल को हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद जब से सिंधु जल संधि को स्थगित किया है, तब से चिनाब, झेलम और सिंधु नदियों पर जिस प्रोजेक्ट के तहत काम चल रहा था, उसमें तेजी कर दी गई है। इस क्षेत्र के मुख्य परियोजनाओं में से एक चेनाब नदी पर रणबीर डैम की लंबाई दोगुना करके 120 किलोमीटर करना भी है। इस नदी का पानी भारत से होकर पाकिस्तान के कृषि क्षेत्र पंजाब तक जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत जब अपना प्रोजेक्ट पूरा कर लेगा, तो वह प्रति सेकंड 150 क्यूबिक मीटर पानी मोड़ सकता है, जबकि अभी करीब 40 क्यूबिक मीटर पानी ही मोड़ पता है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने नेशनल असेंबली में कहा कि उनकी सरकार ने भारत को पत्र लिखकर सिंधु जल संधि पर फिर से विचार करने के लिए कहा है। उन्होंने अपना सांसदों को बताया कि भारत का यह एक्शन गैरकानूनी है। वशिंगटन स्थित सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के जल सुरक्षा विशेषज्ञ डेविड मिशेल ने कहा कि भारत की ओर से बांध, नहर या अन्य बनियादी ढ़ांचों का निर्माण करने में समय लगेगा। हालांकि उन्होंने पड़ोसी मुल्क को चेताते हुए कहा कि पाकिस्तान को इस बात का अंदाजा हो चुका है कि भारत की ओर से उसे किस तरह के दबाव का सामना करना पड़ सकता है। रणबीर नहर के विस्तार की योजना के साथ-साथ भारत उन परियोजनाओं पर भी विचार कर रहा है, जिनसे पाकिस्तान को आवंटित नदियों से पानी का बहाव कम हो जाएगा। इससे पाकिस्तान को खुद के लिए बिजली उत्पादन करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। रिपोर्ट के मुताबिक भारत ने जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट की एक लिस्ट बनाई है, जिससे बिजली उत्पाद को 3,360 मेगावॉट से बढ़कर 12,000 मेगावॉट तक किया जाएगा। इन परियोजनाओं में ऐसे बांध भी शामिल हैं, जो बड़ी मात्रा में पानी जमा कर सकते हैं, जो सिंधु नदी प्रणाली में भारत के लिए पहली बार होगा।

क्या फिर लौट रहा कोरोना! हांगकांग और सिंगापुर में नए मामलों ने सबको चौंकाया

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। एशिया में एक बार फिर कोरोना डराने लगा है। हांगकांग और सिंगापुर में कोरोना-19 के कई नए मामलों ने सभी की चिंताएं बढ़ा दी हैं। बीते कुछ दिनों में ही इन दोनों शहरों में एकाएक कोरोना के मामलों में इजाफा दर्ज किया गया है। मामलों में तेजी को देखते हुए कहा इसे कोरोना की नई वेव समझा जाने लगा हैं। हालात ऐसे हैं कि इस लेकर अधिकारियों ने चेतावनी भी दे दी है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार हांगकांग में इस वायरस से संक्रमण की दर काफी ऊपर पहुंच गई है, जबकि सिंगापुर में भी इस वायरस की चपेट में आने वालों और अस्पताल में भर्ती होने वालों की संख्या में काफी तेजी देखी गई है। हांगकांग के सेंटर फॉर हेल्थ प्रोटेक्शन के प्रमुख अल्बर्ट औ ने बताया कि शहर में कोरोना से संक्रमित होने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। सेंटर के आकंड़ों के अनुसार मई में अभी तक जितने मामले सामने आए हैं वो बीते एक साल में सबसे ज्यादा हैं। सिंगापुर के स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी बढ़ते मामलों को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की है। मंत्रालय के अनुसार बीते कुछ सप्ताह में कोरोना के मामलों में 28

फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। स्थानीय अस्पतालों में कोरोना मरीजों की संख्या हर बीतते दिन के साथ वृद्धि हो रही है। आपको बता दें कि सिंगापुर ऐसे मामलों की संख्या को तभी रिपोर्ट करता है, जब उनमें उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की जाती है।

सर्राफा बाजार

मुजफ्फरनगर, 16 मई, (बु.)। मुजफ्फरनगर सर्राफा बाजार के भाव इस प्रकार रहेः-

सोना-	95,900	चांदी-	97350
सिक्का-	1100	गिन्नी-	71470

आंधी तूफान में विशालकाय नीम का पेड़ गिरा

पैंतालीस लाख रुपये की कीमत की चार कारें हुई क्षतिग्रस्त

बुढ़ाना, 16 मई (बु.)। शुक्रवार की देर सायं सवा छह बजे के आसपास अचानक से आए भयंकर आंधी तूफान में लोक निर्माण विभाग बुढ़ाना के पुराने कार्यालय में खड़ा नीम का एक विशालकाय पेड़ नीचे खड़ी चार कारों पर गिर गया, जिसमें 45 लाख रुपए की कीमत की चारों कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गयी। जमीन पर पड़े पेड़ को मौहल्ले के लोग काट-काटकर अपने घर ले गये। उधर बेचारे कार मालिक सिर पीटते रह गये। ये सभी कारें बुढ़ाना निवासीगण मौहम्मद अबरार की टाटा सफारी कार संख्या यूके 07 बीक्यू 8600, शोकीन अहमद की स्कार्पियो कार, नदीम अहमद की डिजायर कार संख्या यूपी 15 सीएम 4083 और पूर्व सभासद पहलवान नौशाद कुरैशी की ब्रेजा कार संख्या यूपी 12 बीआर 6048 हैं। इस घटना से आंधी तूफान बंद होने के बाद कार चालकों में हड़कंप मच गया और उन्होंने कारों की हालत देखकर अपने-अपने मालिकों को फोन किया। कुछ ही देर बाद चारों कारों के मालिकों ने मौके पर आकर अपनी कारों की हालत को देखकर सिर पीट लिया। जेसीबी मशीन मंगाकर और पेड़ जगह-जगह से काटकर चारों को एक-एक करके पेड़ के नीचे से निकाली गयी। चारों कारों की कीमत लगभग 45 लाख रुपये के आसपास की बताई गयी है। घटना कस्बा पुलिस चौकी के पास की है। यहां पर सैकड़ों लोगों का हुजूम लगा गया और आसपास के लोग मोटी-मोटी लकडियां आरी से काट-काटकर, लेकर चलते बने और उधर सभी कार मालिक इस दृश्य को देखकर अपना सिर धुनते रहे। मौके पर बुढ़ाना कस्बा इंचार्ज संदीप कुमार भी पहुंचे और लोगों को पेड़ के इर्द गिर्द से हटाकर घटना की सूचना वन विभाग के अधिकारियों को दी।

यूपी को जल्द ही 152 जीआई टैग उत्पादों वाला राज्य बनाएगी योगी सरकार

लखनऊ, 16 मई (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार ज्योग्राफिकल इंडीकेशंस (जीआई) टैग उत्पादों की वृद्धि के लिए बड़ा कदम उठाने जा रही है। देश में 77 जीआई टैग वाले उत्पादों के साथ उत्तर प्रदेश अव्वल है, मगर अब यूपी अपनी इस बढ़त को नए आयाम पर पहुंचाने जा रहा है। दरअसल, सीएम योगी के निर्देश पर एक कार्ययोजना को तैयार किया गया है, जिसके जरिए प्रदेश में जीआई टैग वाले उत्पादों की संख्या में रिकॉर्ड स्तर के इजाफे की प्रक्रिया को पूरा किया जाएगा। कार्ययोजना के अनुसार वर्ष 2025-26 में 75 अतिरिक्त जीआई उत्पादों को घोषित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें से 25 उत्पादों का आवेदन जीआई रजिस्ट्री (चेन्नई) में फाइल किया जा रहा है, जिसे जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा। इस प्रकार, उत्तर प्रदेश जल्द ही देश में 152 जीआई टैग प्राप्त उत्पादों वाला पहला राज्य बन जाएगा। इसके साथ ही, प्रदेश के जीआई उत्पादों को लोकप्रिय बनाने, जागरूकता फैलाने तथा इसके यूजरबेस को बढ़ाने के लिए कई बड़े कदम उठाए जाएंगे। एमएसएमई विभाग द्वारा तैयार की जा रही कार्ययोजना में जीआई टैग वाले उत्पादों की संख्या बढ़ाने के साथ उनकी लोकप्रियता, जागरूकता और ऑथोराइज्ड यूजर बेस बनाने के लिए एक विस्तृत फ्रेमवर्क पर काम चल रहा है।

पुलिस व बदमाश के बीच मुठभेड़ में शातिर अपराधी घायल, अवैध हथियार व चोरी की बाइक बरामद

चरथावल, 16 मई (बु.)। थाना क्षेत्र के ग्राम कुटेसरा से जखवाला मार्ग पर रात्रि चैकिंग के दौरान पुलिस ने एक शातिर अपराधी को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। पुलिस ने अभियुक्त के कब्जे से अवैध हथियार व चोरी की बाइक बरामद की है। मुठभेड़ की सूचना पर सीओ सदर देवव्रत वाजपेई मौके पर पहुंचे एवं मुठभेड़ की जानकारी ली। चरथावल थाना प्रभारी जसवीर सिंह के नेतृत्व में में कुटेसरा चौकी प्रभारी अमित कुमार, उपनिरीक्षक परविन्द्र सिंह,हेड कांस्टेबल सोनू सिरोही, अजीत कुमार, कांस्टेबल जुहैब आलम आदि रात्रि पुलिस चौकी कुटेसरा से जखवाला जाने वाले रास्ते पर संदिग्ध व्यक्ति व वाहनों की चैकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक बिना नम्बर मोटरसाईकिल पर सवार संदिग्ध व्यक्ति आते हुए दिखाई दिया, जिसे चैकिंग हेतु रूकने का इशारा किया गया, परन्तु मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति मोटर साईकिल को तेजी से वापस मोड़कर भागने लगा। इसी प्रयास में मोटरसाईकिल फिसलने से वह गिर गया तथा पुलिस टीम पर फायरिंग करते हुए जंगल में भागने लगा। अभियुक्त द्वारा की गयी फायरिंग में पुलिस टीम बाल बाल बची। पुलिस की जवाबी फायरिंग में वह घायल हो गया। पकड़े गए अपराधी की पहचान रोशन बंगाली उर्फ दिल्ला के रूप में हुई है। उसके पास से एक अवैध तमंचा .315 बोर, एक जिंदा और एक खोखा कारतूस और चोरी की बाइक बरामद की गई है। यह कार्रवाई अपर पुलिस महानिदेशक मेरठ जोन, पुलिस उपमहानिरीक्षक सहारनपुर परिक्षेत्र और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार के निर्देशन में की गई है। मुठभेड़ की सूचना पर सीओ सदर देवव्रत वाजपेई मौके पर पहुंचे एवं मुठभेड़ की जानकारी ली।

संस्थापक सम्पादक एवं हमारे प्रेरणास्रोत स्व. उत्तमचन्द्र शर्मा

मुजफ्फरनगर बुलेटिन

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक श्रीमति पूजा दुआ ने 'मुजफ्फरनगर बुलेटिन' प्रातःकालीन दैनिक 224-सिविल लाइन्स दक्षिणी, मुजफ्फरनगर को 'दैनिक बुलेटिन प्रेस' 223-सिविल लाइन्स दक्षिणी, मुजफ्फरनगर से मुद्रित कराकर 224-सिविल लाइन्स दक्षिणी, मुजफ्फरनगर से प्रकाशित किया।
सम्पादक-अंकुर दुआ
(प्रकाशक)-98370-42840, 94127-10840
(विज्ञापन)-9368549219 (नि.) 7983359929
सम्पादक-9412210257
E-mail :
muzaffarnagar_bulletin@yahoo.co.in
muzaffarnagar_bulletin@rediffmail.com

1973-2025

सम्पादक की क़लम से

ऑपरेशन थमा, बयानबाजी शुरू

ऑपरेशन सिंदूर तो थम गया लेकिन बयानबाजी शुरू हो गयी है। अफसोस की बात यह है कि अच्छे, दानिशमंदाना बयान बहुत कम हैं यानी उत्कृष्ट, बुद्धिमत्ता पूर्ण वक्तव्य बहुत कम हैं,अहमकाना यानी मूर्खता पूर्ण वक्तव्य बहुत हैं। अहमकाना यानी मूर्खता पूर्ण वक्तव्य देने वाले सोच ही नहीं रहे हैं कि वे क्या कह रहे हैं। चैनलों पर कुतर्क चल रहे हैं और बड़ी बेशर्मी से कुतर्क चल रहे हैं। पाकिस्तान इन्हीं कुतर्कों और अहमकाना बयानों को अपने यहां चला रहा है। पाकिस्तान के झूट को ये अहमकाना बयान बल दे रहे हैं। भारतीय सेना ने जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तानी आतंकी ढांचों पर सटीक हमले किए और उसके एयर बेस उड़ाए यहां तक कि जिस युद्ध सामग्री पर पाकिस्तान इतराता था वह भी खतरे में आ गयी, भारत की पाकिस्तान को मिली करारी चोट की सेटेलाइट तस्वीरें होने के बावजूद, दुनिया के मान लेने के बावजूद भी ऐसे लोग हैं, जिनकी समझ के बारे में क्या ही कहा जाए। एक कांग्रेस विधायक ने आपरेशन सिंदूर पर सवाल खड़े कर दिए हैं। कर्नाटक के कांग्रेस विधायक कोथुर मंजुनाथ ने ऑपरेशन की सफलता पर सवाल उठाते हुए इसे 'महज दिखावा' करार दिया। कोथुर मंजुनाथ की आम जनता ही सोशल मीडिया पर क्लास ले रही है, उन्हें जमकर धिक्कारा जा रहा, उन पर लानत भेजने वाले रुक नहीं रहे हैं। मंजूनाथ ने तल्ख अंदाज में कहा कि कुछ हुआ ही नहीं,बस दिखावे के लिए तीन-चार विमान ऊपर से भेजे और वापस बुला लिए। क्या इससे पहलगाम में मारे गए 26-28 लोगों को इंसाफ मिलेगा? क्या उन महिलाओं का दुख इस तरह कम होगा? क्या यही तरीका है उनका सम्मान करने का? भारत सरकार ने 7 मई को किए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद दावा किया था कि पाकिस्तान में 9 बड़े आतंकी लॉन्चपैड तबाह किए गए और करीब 100 आतंकियों को मार गिराया गया, लेकिन कांग्रेस विधायक मंजुनाथ इस दावे को संदेह की नजर से देख रहे हैं। मंजुनाथ ने 22 अप्रैल को पहलगाम के बैसरन घाटी में हुए हमले के जिम्मेदार आतंकियों के मारे जाने की पुष्टि पर भी संदेह जताया। उन्होंने सवाल करते हुए पूछा, क्या पक्के तौर पर पता है कि 100 आतंकवादी मारे गए? उनकी पहचान क्या है? क्या वे वही आतंकी थे, जिन्होंने 22 अप्रैल को बाईसारन घाटी में हमला किया था? उन्होंने कहा,क्या यह पुष्टि हुई कि 100 आतंकवादी मारे गए? वे आतंकवादी कौन थे जो हमारी सीमा में घुसे? उनकी पहचान क्या है? सीमा पर सुरक्षा क्यों नहीं थी? वे कैसे भाग निकले? हमें आतंकवाद की जड़, शाखाओं और तनों को पहचानकर खत्म करना चाहिए। उन्होंने इसे खुफिया तंत्र की पूर्ण विफलता करार दिया। विधायक ने मीडिया पर भी सवाल खड़े करते हुए कहा कि सभी टीवी चैनल अलग-अलग कहानियां सुना रहे हैं। कोई चैनल कहता है यहां मारा, कोई कहता है वहां मारा। कोई नहीं बता रहा कि असल में मारा कौन गया, कहां मारा गया, कितने मारे गए। सरकार की ओर से कोई स्पष्ट बयान नहीं आया। कर्नाटक के एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि यह एक कांग्रेसी के दिमागी दिवालिये पन का मामला नहीं है ज्यादातर कांग्रेसी अक़्ल से पैदल हो गए हैं इन्हें अपने वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम का लेख पढ़ना चाहिए, ताकि सच पता चले और दिमाग की बुझी बत्ती जले। दूसरी तरफ मध्य प्रदेश के डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा के सेना पर दिए गए बयान पर कांग्रेस की सांसद प्रियंका गांधी ने प्रतिक्रिया दी। मंजुनाथ पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, बीजेपी के नेताओं की ओर से लगातार हमारी सेना का अपमान अत्यंत शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले मध्य प्रदेश के एक मंत्री ने महिला सैनिकों पर अभद्र टिप्पणी की और अब उनके उप मुख्यमंत्री ने सेना का घोर अपमान किया है। पूरे देश की जनता सेना के शौर्य पर गौरवान्वित है, लेकिन बीजेपी के लोग सेना को अपमानित कर रहे हैं और बीजेपी अपने इन नेताओं पर कार्रवाई करने की जगह उन्हें बचाने में पूरा जोर लगा रही है। बीजेपी ऐसा करके हमारी सेना और देशवासियों को क्या संदेश देना चाहती है? जगदीश देवड़ा का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वो कहते सुनाई पड़ रहे हैं, यशस्वी प्रधानमन्त्री जी को धन्यवाद देना चाहेंगे। पूरा देश, देश की वो सेना, वो सैनिक, उनके चरणों में नतमस्तक हैं। उनके चरणों में पूरा देश नतमस्तक है। उन्होंने जो जवाब दिया है, उसकी जितनी सराहना की जाए, जितना कहा जाए, एक बार उनके लिए जोरदार तालियां बजाकर स्वागत करिए। कांग्रेस ने इसे सेना का अपमान कहा है, तो वहीं बीजेपी प्रवक्ता आशीष अग्रवाल ने कहा है कि कांग्रेस डिप्टी सीएम के बयान को तोड़-मरोड़कर पेश कर रही है। इस मामले पर बीजेपी प्रवक्ता आशीष अग्रवाल ने कांग्रेस पर बयान को गलत तरीके से पेश करने का आरोप लगते हुए कहा कि जैसी नजर होती है, वैसा ही नजरिया हो जाता है, यही हाल है कांग्रेसियों का। जगदीश देवड़ा ने कहा है कि पूरा देश, देश के सैनिकों और सेनाओं के प्रति नतमस्तक है। कांग्रेस इसे तोड़- मरोड़कर पेश कर रही है, इससे पहले प्रदेश सरकार के मंत्री विजय शाह के कर्नल सोफिया कुरैशी पर दिए गए विवादास्पद बयान पर भी हंगामा हुआ था। अदालत के आदेश पर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई, अदालत ने उनकी टिप्पणी को बहुत गलत माना। अब कांग्रेस ने डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा के एक बयान को 'सेना विरोधी' बताते हुए उनके इस्तीफे की मांग की है। इसी तरह की टिप्पणी उत्तर प्रदेश के एक वरिष्ठ नेता ने भी की। उन्हें भी सोशल मीडिया यूजर मजा चखा रहे हैं। हैरानी होती है कि शक्ल से समझदार दिखने वाले नेता भी संवेदनशील मामलों पर नासमझी की बातें करते हैं। पिछले हफ़्ते विपक्षी दलों के बयानों पर बीजेपी के राज्य सभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने बड़ा हमला बोला था। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान इस मामले में भारत से कहीं ज्यादा मजबूत है कि वहां कोई भी विपक्षी नेता सेना का मनोबल गिराने वाला बयान नहीं दे रहा। बीजेपी सांसद ने कहा कि वहां के विपक्षी नेताओं के बयान भारतीय टीवी चैनल्स पर नहीं चल रहे हैं।

चार तीर

सुनील उत्सव

'बात' 'दलील' 'रोग' 'दवाई'

जब बात आए अपने बज़ुर्गों की भूल की,
तो झूट की दलील की कैंची से काटना।
बीमारियों को टालना सहना नहीं 'सुनील',
हर रोग को अचूक दवाई से काटना।

मोती झील को पिकनिक स्पॉट बनाने की ओर बढ़ा दूसरा कदम

- अफसरों ने मौके पर जाकर परखी व्यवस्था, सुधार के निर्देश - ऐतिहासिक धरोहर को संजोने के लिए डीएम ने की सार्थक पहल

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। ऐतिहासिक धरोहर के साथ कई रहस्यों व पूर्व वर्ष जल स्रोत बने रहने के कारण कई किवदंतियों और कहानियों को समेटने वाली मोती झील डीएम उमेश मिश्रा के विशेष प्रयास से अब फिर से निखरने लगी है। शुक्रवार को झील का सफाई अभियान पूर्ण हो जाने के बाद अधिकारियों ने स्थलीय निरीक्षण करते हुए अगले चरण के कार्य को प्रारम्भ कराया। इसके लिए झील पर तीन फीट का बांध बनाने, नाले से कूड़ा करकट रोके जाने के साथ सौंदर्यकरण के लिए डीपीआर बनाने के लिए कवायद शुरू कर दी गई है। नगर के पश्चिमी छोर, शामली रोड पर काली नदी के पास स्थित मोती झील अपने रहस्य और इससे जुड़े इतिहास व रोमांच के कारण चर्चा में रहती है। पूर्व में इस झील को जनपद में सुसाइड स्पॉट के रूप में पहचाना जाने लगा था। पदापर्शन झील के नाम से पहचान रखने वाली झील का संबंध कुछ लोग महाभारत काल से जोड़ते रहे हैं जिम्मेदारी की अनदेखी के चलते दयनीय अवस्था में रहने वाली झील के दिन अब बहुरने जा रहे हैं। डीएम उमेश मिश्रा ने इस ऐतिहासिक महत्व व रहस्य को संजोने वाली मोती झील को पिकनिक स्पॉट के रूप में पहचान दिलाने का बीड़ा उठाते हुए कई समाजसेवी संगठनों को जोड़ा जा रहा है। झील के पहले चरण में सफाई कराने के बाद दूसरे चरण का कार्य कराने की तैयारी है। शुक्रवार को डीएम उमेश मिश्रा के निर्देश पर नगर मजिस्ट्रेट विकास कश्यप व ईओ पालिका डॉ. प्रज्ञा सिंह ने मोती झील के प्रोजेक्ट पर काम कर रही आर्ट ऑफ लिविंग संस्था के लोगों के साथ स्थलीय भ्रमण किया। यहां साफ सफाई के कार्य को परखने के साथ अन्य बिन्दुओं पर चर्चा की गई। झील में कूड़ा करकट और प्रदूषित जल रोकने के लिए नाले का प्रबंध, जल स्तर बढ़ाने के लिए बांध निर्माण व अन्य कार्यों की जरुरत के आधार पर विचार मंथन किया गया। एडीएम वित्त गजेन्द्र कुमार ने बताया कि मोती झील की सफाई अभियान डीएम उमेश मिश्रा द्वारा 28 अप्रैल को प्रारम्भ कराते हुए 15 दिन की समय सीमा तय की थी। इसके तहत झील से कूड़ा करकट व जलकुंभी की सफाई का कार्य पूर्ण कर लिया गया। बारिश के दिनों में झील का जल स्तर बढ़ने की संभावना को देखते हुए इसके चारों ओर 3 फीट का बांध निर्माण करने, इसमें ब्रिज की ओर से आ रहे नाले से कूड़ा रोकने के लिए जाली प्रबंधन, प्रदूषित जल रोकने के लिए बायो कल्चर के सहारे शुद्धिकरण कार्य कराने पर चर्चा हुई है। इसके साथ डीएम के निर्देश पर शनिवार को तहसील सदर की टीम मोती झील की भूमि को चिन्हित कराते हुए सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे को हटवाने की कार्यवाही होगी। आर्किटेक्ट से इसके सौन्दर्यकरण के लिए डीपीआर बनवाने की कवायद की जा रही है। इसके लिए पालिका प्रशासन के साथ समन्वय बनाने के निर्देश दिये गये हैं, पालिका ने पूर्व में काली नदी रिवर फ्रंट व झील के सौन्दर्यकरण के लिए डिजाइन बनवाने थे। यहां पर पाथ-वे, लाइटिंग, बैठने के लिए बैंच बनवाने की योजना है। उन्होंने बताया कि अब दूसरे चरण में नाले की सफाई के लिए पालिका ईओ को निर्देशित किया है, जो शुरू करा दिया गया है। तीसरे चरण में सौन्दर्यकरण का काम शुरू होगा और जल्द मोती झील एक बड़े पिकनिक स्पॉट के रूप में नजर आयेगी।

एडीएम प्रशासन संजय कुमार सिंह ने संभाला चार्ज

- शासन की प्राथमिकताओं का क्रियान्वयन उनकी प्राथमिकता

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। जनपद में चली तबादला एक्सप्रेस की जद में आए एडीएम प्रशासन नरेन्द्र बहादुर सिंह का लखीमपुर खीरी तबादला होने के करीब एक सप्ताह बाद शुक्रवार को जिले के नवागंतुक एडीएम प्रशासन संजय कुमार सिंह ने कलेक्ट्रेट में पहुंच अपना कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने इस बीच कलेक्ट्रेट स्थित अपने कार्यालय में पहुंचकर कामकाज किया और फिर डीएम उमेश मिश्रा के साथ बैठक सहित कई निरीक्षणों में अपनी उपस्थिति दर्ज करके अपनी कार्य प्रणाली का अहसास कराया। मीडिया से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि शासन की प्राथमिकता ही उनकी शीर्ष प्राथमिकता में शामिल है। उत्तर प्रदेश शासन स्तर से बीते 8 मई को पीसीएस अधिकारियों का तबादला किए जाने के बीच मुजफ्फरनगर में करीब साढ़े 3 वर्षों तक तैनात एडीएम प्रशासन नरेन्द्र बहादुर सिंह को एडीएम वित्त एवं राजस्व लखीमपुर खीरी बनाकर भेजने के साथ ही उनके स्थान पर लखीमपुर के एडीएम वित्त एवं राजस्व संजय कुमार सिंह को मुजफ्फरनगर में बतौर एडीएम प्रशासन के रूप में नवीन तैनाती मिली थी। इस बीच भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के चलते एडीएम प्रशासन नरेन्द्र बहादुर सिंह को रिलीव ही नहीं किया गया, जिसके कारण चार्ज में देरी हो गई। शुक्रवार को इन्हीं व्यवस्थाओं के बीच नवागंतुक एडीएम प्रशासन के पद पर संजय कुमार सिंह ने कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने अपने कार्यालय के कर्मचारियों से भेंट कर परिचय प्राप्त किया। मूल रूप से जनपद जौनपुर के निवासी संजय कुमार सिंह वर्ष 2010 बैच के पीसीएस अधिकारी हैं, प्रशिक्षण के उपरांत मई 2015 को वो प्रशासनिक सेवा में आये और जालौन में उन्हें डिप्टी कलक्टर बनाया गया। इसके बाद संजय सिंह नगर निगम प्रयागराज में मई 2017 से मार्च 2018 तक उपायुक्त रहे। यहां से उनका तबादला नगर मजिस्ट्रेट के पद पर बदायूं जनपद में किया गया। करीब पांच महीने बाद ही संजय सिंह का तबादला प्रमोशन मिलने के कारण एडीएम वित्त व राजस्व पद पर अगस्त 2018 को हरदोई जनपद में कर दिया। यहां पर उन्होंने तीन साल से ज्यादा समय तक अपने कार्यकाल में अनेक सराहनीय कार्य किये। हरदोई से संजय सिंह को सितम्बर 2021 में लखीमपुरी खीरी में एडीएम वित्त के पद पर ही तैनाती मिली। यहां वो लंबी पारी खेलने के बाद मुजफ्फरनगर में एडीएम प्रशासन के पद पर कार्यरत हुए हैं।

किसान समस्याओं को लेकर दूसरे दिन भी डटे रहे किसान

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। शुक्रवार को दूसरे दिन भी किसान मजदूर संगठन का अफसरों की उपेक्षा को लेकर विरोध प्रदर्शन कलेक्ट्रेट में दूसरे दिन भी जारी रहा। इस दौरान किसान मजदूर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर पूरन सिंह ने कहा कि भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले अधिकारी व कर्मचारियों की कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक इन समस्याओं का समाधान नहीं हो जाता, तब तक यह धरना ऐसे ही जारी रहेगा। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठा. पूरण सिंह ने कहा कि शहरी और देहात क्षेत्र में बदले जर्जर तार और खम्भों में बड़ा घोटाला किया गया है। इस मामले में कंपनी के साथ विभागीय अफसरों में मिलीभगत कर अरबों रुपये की बंदरबांट की है। उन्होंने कहा कि प्रशासन को इस मामले की जांच करानी चाहिए। जांच में सभी कुछ साफ हो जायेगा। उन्होंने कहा कि शाहपुर बिजलीघर के टाउन फीडर पर कोई कार्य नहीं हुआ, फिर भी 16.8 किमी. का बिल बनाया गया। अटाली बिजलीघर के नया फीडर पर कार्य शून्य रहा, लेकिन 30.34 किमी. का भुगतान यहां भी कर लिया गया। खरड़ बिजली घर पर देवी फीडर का न तो कोई सर्वे हुआ और न ही 12 किमी. से अधिक कार्य, लेकिन 31 किमी. का बिल बनाकर भुगतान लिया गया। उसी प्रकार न्यू रुड़की रोड पर मल्लूपुरा फीडर पर मात्र 10 किमी. कार्य करने के बदले 28 किमी. का बिल, वहीं साकेत फीडर पर केवल 10 किमी. कार्य के बदले सर्व 18 किमी का हुआ था, परंतु बिल 44 किमी. का है। उन्होंने कहा कि कंपनी और विद्युत विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत से योजनाबद्ध तरीके से अनियमितता व फर्जी बिलिंग की गई। इस दौरान धरने पर मुख्य रूप से कृष्ण कुमार, शंकर राणा, शहजाद राणा, देवेन्द्र सिंह, अनिल राणा, विजय राणा, नरेन्द्र राणा, राहुल, कुलदीप सोमपाल, रामकुमार एवं विनोद आदि मौजूद रहे।

पुरकाजी विधानसभा की तिरंगा यात्रा उत्साह से निकली

पुरकाजी, 16 मई (बु.)। कस्बे में पुरकाजी विधानसभा क्षेत्र के भाजपाईयों ने उत्साह के साथ तिरंगा यात्रा निकाली। इस दौरान राष्ट्रभक्ति के नारे गूंजे। थाने के पास से वरिष्ठ भाजपा नेता भारत भूषण खुल्लर के निवास पर पुरकाजी विधानसभा क्षेत्र के बरला, पुरकाजी, रोहाना, सरवट आदि के पांच मंडलों के भाजपाई एकत्र हुए। गगनभेदी नारों के साथ शुरू हुई तिरंगा यात्रा राजमार्ग, सब्जी मंडी, बाजार समेत विभिन्न मौहल्लों से होती हुई वापस भाजपा नेता खुल्लर के निवास पर पहुंची। इससे पहले पांचों नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों का स्वागत हुआ। कार्यक्रम में पुरकाजी के निवर्तमान विधायक, पुरकाजी मंडल अध्यक्ष अजय पंवार के साथ ही वरिष्ठ भाजपा नेता राकेश आडवाणी, गजे सिंह रेत्तानंगला, पवन त्यागी, केपी सिंह, हरिराम सक्सैना, निर्दोष जैन, संजय वर्मा, सुशील वर्मा, पंड़ित भानू शर्मा, संदीप गोयल, नवीन गोयल, बिजेन्द्र त्यागी, विपिन गोयल, डॉ. रणजीत सिंह गोसीं, सुक्कड सिंह, विनित गुर्जर, राहुल शर्मा रामपुर, नरेश कोरी, राजू राठी, मुकेश त्यागी आदि अनेक भाजपाई तिरंगा यात्रा में शामिल रहे।

हिन्दू संगठन बोले, हर चौराहे पर छाती तानकर पुलिसकर्मी करते हैं वाहन चालकों से बदतमीजी

- भाजपा नेता संग दरोगा द्वारा दुर्व्यवहार पर हिन्दू संगठनों में आक्रोश, दी आंदोलन की चेतावनी

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। संयुक्त हिंदू मोर्चा की संपन्न बैठक में कड़े शब्दों में भाजपा नेता के साथ दरोगा द्वारा चेकिंग के नाम पर बदतमीजी करने की निंदा करते हुए पुलिस को सुधरने की चेतावनी दी। संयुक्त हिंदू मोर्चा के प्रतिनिधियों की पुरानी तहसील मार्केट स्थित संपर्क कार्यालय पर संपन्न बैठक में हिंदू मोर्चा अध्यक्ष मनोज सैनी ने कहा कि नगर कोतवाली के रामलीला टीला चौकी के दरोगा ने वाहन चेकिंग के नाम पर भाजपा नेता के साथ जो बदतमीजी की, उससे जाहिर होता है कि जिले का पुलिस प्रशासन बेलगाम हो चुका है। उन्होंने वाहन चेकिंग के नाम पर जमकर लोगों से बदतमीजी किए जाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि पहले सपा सरकार में आम आदमी वाहन लेके सुनसान रास्तों पर जाने से बदमाशों की लूटपाट के डर से बचता था। आज वहीं आदमी शहर में आते हुए इस कारण डरता है कि कहीं वाहन चेकिंग के नाम पर पुलिस वसूली का शिकार न हो जाए। उन्होंने पुलिस प्रशासन को इस मुद्दे पर चेतावनी देते हुए कहा कि वाहन चेकिंग के नाम पर लोगों से बदतमीजी करने से बाज आ जाए अन्यथा पुलिस अफसरों का घेराव कर प्रदर्शन किया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से शिव सेना के प्रदेश महासचिव डॉ. योगेंद्र शर्मा, पंकज भारद्वाज, लोकेश सैनी, दिनेश बंसल, वागेश अग्रवाल, शलभ गुप्ता, राजेश कश्यप, हरिओम त्यागी, मुकेश आर्य, संजय गोयल, अखिलेश पुरी, अमरीश त्यागी, हरीश पालीवाल, विकास अग्रवाल, आशीष शर्मा, पुष्पेंद्र सैनी, सचिन जोगी आदि मौजूद रहे।

ग्रेन चैंबर पब्लिक स्कूल जूनियर विंग में पूल पार्टी का आयोजन

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बुस.)। स्थानीय ग्रेन चैंबर पब्लिक स्कूल जूनियर विंग में पूल पार्टी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हेडमिस्ट्रेस ममता चौहान, काउंसलर (जूनियर विंग) कंचन एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहे। गर्मी के मौसम में विद्यार्थियों के लिए स्कूल का माहौल खुशनुमा बनाने के लिए ग्रेन चैंबर पब्लिक स्कूल में आज बाल वाटिका 1 अ, 1 ब, बाल वाटिका 2 अ, 2 ब, के विद्यार्थियों के लिए पूल पार्टी का आयोजन किया गया पार्टी के दौरान बच्चों ने पूल में तरह-तरह के आनंदप्रद गेम्स खेले और गानों पर डांस कर भरपूर आनंद उठाया। बच्चों ने गेंद, गुब्बारे व रिंग जैसे विभिन्न प्रॉप्स का उपयोग कर-के पार्टी को यादगार बना दिया। तैराकी की पोशाक पहनकर पहुंचे बच्चों ने पार्टी के दौरान अपने मित्रों के साथ स्नैक्स, फल व जूस आदि साझा किया। अंत में विद्यालय की हेडमिस्ट्रेस ममता चौहान ने कहा कि गर्मी के मौसम में बच्चों को ऊर्जावान बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन पूल पार्टी सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। यह मौसम में आयोजित की जाने वाली अन्य सभी बाहरी गतिविधियों के लिए तैयार करता है। ऐसी गतिविधियां, जिनमें पानी से खेलना शामिल है।

चेयरपर्सन ने पालिका में गंदगी देख लगाई कर्मियों को फटकार

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। लंबे अंतराल के बाद शुक्रवार में पालिका पहुंची चेयरपर्सन मीनाक्षी स्वरूप ने पालिका परिसर में काफी गंदगी मिलने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए अधीनस्थों को फटकार लगाई। वहीं मौके पर सफाई निरीक्षक को तलब करते हुए विशेष सफाई कराने के निर्देश दिए। इसके साथ ही चेयरपर्सन ने देरी से बन रहे जन्म मृत्यु प्रमाण पत्रों पर भी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने उक्त कार्यों में तेजी लाने और लोगों को अनावश्यक रूप से परेशान न करने के निर्देश दिए। नगर पालिका की चेयरपर्सन मीनाक्षी स्वरूप शुक्रवार को वार्ड सभासद मनोज वर्मा, मौ. खालिद आदि के साथ दोपहर में पालिका पहुंची। उन्होंने नगर पालिका के विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं को परखा। इस बीच उन्होंने नीचे बने गोदाम को भी देखा, जिसमें पथ प्रकाश संबंधित काफी सामान रखा हुआ था। इसके बाद वो पालिका में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने वाले पटल में पहुंची। इस दौरान यहां पर मौजूद लोगों ने चेयरपर्सन को बताया कि यहां आवेदन किए जाने के बाद भी समय से प्रमाण पत्र नहीं बन पा रहे है। चेयरपर्सन ने इसमें सुधार करने के लिए भी निर्देश दिए। चेयरपर्सन ने सफाई निरीक्षक को पालिका परिसर में सफाई व्यवस्था दुरूस्त कराने के निर्देश देते हुए चेतावनी दी कि जो कर्मचारी सही तरह से कार्य नहीं करेगा, उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सार्वजनिक सूचना

मेरे पुत्र उत्सव गर्ग के जन्म प्रमाण पत्र संख्या 12074, दिनांक 17/12/2011 में गलती से माता का नाम प्रियंका व पिता का नाम पुनीत अंकित करा दिया गया, जबकि वास्तविक नाम क्रमश: प्रियंका गर्ग व पुनित कुमार गर्ग हैं और भविष्य में भी इन्हीं नामों से जाने जाएंगे। शुद्धिकरण हेतु सम्बन्धित विभाग में आवेदन प्रस्तुत किया जा रहा है।

निवेदक- पुनीत कुमार गर्ग
निवासी- 111/78, गऊशाला नदी रोड, मुजफ्फरनगर, मो. 9412340201

विशाल पांडे मुजफ्फरनगर के नए एसपी क्राइम बने

- यूपी में 48 पीपीएस अफसरों का तबादला

लखनऊ, 16 मई (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश सरकार ने यूपी में 48 पीपीएस अफसरों का तबादला कर दिया है जिनमें मुजफ्फरनगर के एसपी क्राइम भी बदल दिए गए हैं। विशाल पांडे मुजफ्फरनगर के नए एसपी क्राइम होंगे। प्रदेश सरकार द्वारा जारी सूची के अनुसार मुजफ्फरनगर के एसपी क्राइम प्रशांत कुमार प्रसाद को सिद्धार्थनगर में अपर पुलिस अधीक्षक बनाकर भेजा गया है, जबकि अंबेडकर नगर के एसपी सिटी विशाल पांडे मुजफ्फरनगर के नए एसपी क्राइम होंगे। अलीगढ़ के एसपी ट्रैफिक मुकेश चंद उत्तम श्रावस्ती, प्रवीण कुमार यादव श्रावस्ती से अलीगढ़, चक्रपाणि त्रिपाठी चित्रकूट से अयोध्या, फतेहपुर से विजय शंकर मिश्र पीएसी मुख्यालय लखनऊ, अमेठी से हरेंद्र कुमार अंबेडकर नगर के एसपी पश्चिमी बनाए गए हैं। जौनपुर से शैलेंद्र कुमार सिंह अमेठी, महाराजगंज से आतिश कुमार सिंह जौनपुर,सिद्धार्थ नगर से सिद्धार्थ महाराजगंज,कानपुर कमिश्नरेट से श्रीमती अमिता सिंह आगरा कमिश्नरेट, पीएसी मुख्यालय से कपिल देव सिंह कानपुर कमिश्नरेट, कानपुर नगर से मनोज कुमार पांडे वाराणसी, बरेली से मुकेश प्रताप सिंह सीबीसीआईडी मुख्यालय और कानपुर नगर से मनीष चंद्र सोनकर बरेली भेजे गए हैं। अयोध्या से एसपी सिटी मधुबन कुमार सिंह आजमगढ़, कानपुर नगर से विजेंद्र द्विवेदी बदायूं, बदायूं से अमित किशोर श्रीवास्तव बिजनौर, मथुरा से त्रिगुण विशेन फिरोजाबाद, इटावा से सत्यपाल सिंह चित्रकूट, संभल से श्रीशचंद्र इटावा, लखनऊ से श्रीमती मनीषा सिंह गौतम गौतम बुध नगर, ललितपुर से अनिल कुमार सोनभद्र, सोनभद्र से कालू सिंह ललितपुर, बिजनौर से धर्म सिंह मार्छल पीएसी मुरादाबाद भेजे गए हैं।

ग्राम प्रधान व सचिवों को दिए मॉडल ग्राम पंचायत के टिप्स

- विकास भवन में एक दिवसीय कार्यशाला में दी जरुरी जानकारी

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। विकास भवन सभागार में मंडल स्तरीय अधिकारियों के साथ ग्राम प्रधान एवं सचिवों की मौजूदगी में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जीपीडीपी एवं पीडीआई समिति सदस्यों के साथ ही मीडिया प्रतिनिधियों के साथ संपन्न कार्यशाला का सीडीओ कंडारकर कमल किशोर देश भूषण द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करते हुए शुभारंभ किया गया। विकास भवन में संपन्न कार्यशाला में ग्राम पंचायतों को मॉडल ग्राम पंचायत बनाने के टिप्स देते हुए इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। शुक्रवार को विकास भवन सभागार में सीडीओ कंडारकर कमल किशोर देश भूषण की अध्यक्षता में संपन्न एक दिवसीय कार्यशाला में जीपीडीपी एवं पीडीआई समिति सदस्य, मॉडल ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान एवं सचिव, मीडिया कर्मी एवं जनपद स्तरीय अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि एलएसजीडी 09 थीम के अनुरूप अपने-अपने विभाग द्वारा संचालित योजनाओं को जीपीडीपी में सम्मिलित करते हुए इन योजनाओं का लाभ ग्राम पंचायत स्तर तक पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाया जाए। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने बताया कि पीएआई इंडीकेटर्स के अनुसार अपने अपने विभाग से सम्बंधित बिंदुओं की निरंतर समीक्षा करने के साथ इंडीकेटर्स को अद्यतन करते रहें। प्रशिक्षण में उपनिदेशक(प.) प्राचार्य द्वारा प्रशिक्षण के उद्देश्य के बारे में समस्त प्रतिभागियों को बताया गया। प्रशिक्षण में डीआईपीएम सहारनपुर मंडल द्वारा पीएआई इंडीकेटर्स को लाइव पोर्टल पर दिखाते हुए समझाया गया। वहीं प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर ने इस दौरान एलएसडीजी की 9 थीमों के संबंध में विस्तारपूर्वक प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में जिला पंचायत राज अधिकारी धर्मेन्द्र कुमार ने प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रशिक्षण का समापन किया। प्रशिक्षण में डीपीआरसी फैकल्टी आदि उपस्थित रहे।

होती लाल शर्मा को मिला आचार्यश्री सम्मान

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बुस.)। गत दिवस को आचार्य कुल की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की उपस्थिति में देश के विभिन्न राज्यों से पधारे हुए राष्ट्रीय आचार्य कुल के पदाधिकारी एवं सदस्य गण तथा विभिन्न संगठन एवं समाजसेवी समूह की उपस्थिति में प्रमुख गांधी विचारक होती लाल शर्मा को राष्ट्रीय आचार्य कुल के अध्यक्ष डॉ. धर्मेंद्र तिवारी एवं महामंत्री डॉ. विजय शंकर शुक्ला तथा परमधाम विनोबा आश्रम वर्धा की संरक्षका मैथिली बहन की उपस्थिति में आचार्य श्री सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान उनके द्वारा जन मानस में सत्य प्रेम, करुणा निर्भय निष्पक्ष की भावना को जागृत करने और किसी भी प्रकार के भेदभाव के संपूर्ण प्राणी जगत के प्रति कल्याण की भावना रखकर संपूर्ण धरातल पर मैत्री और बंधुत्व का विस्तार करने के लिए दिया गया है। यह सम्मान उनको उत्तराखंड आचार्य कुल की इकाई ने दो दिवसीय सम्मेलन के अवसर पर देहरादून में प्रदान किया।

अदाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स ने तुर्की की कंपनी सेलेबी से ग्राउंड हैंडलिंग समझौता किया खत्म

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। अदाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स ने मुंबई और अहमदाबाद एयरपोर्ट पर तुर्किये की सेलेबी कंपनी के साथ ग्राउंड हैंडलिंग रियायत समझौते को तत्काल प्रभाव से खत्म कर दिया है। अदाणी एयरपोर्ट्स ने एक बयान में कहा कि सेलेबी की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के सरकार के फैसले के बाद कि हमने मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट और अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर सेलेबी के साथ ग्राउंड हैंडलिंग कंसेशन एग्रीमेंट को खत्म कर दिया है। कंपनी ने कहा कि सेलेबी को सभी ग्राउंड हैंडलिंग सुविधाएं तुरंत हमें सौंपने का निर्देश दिया गया है। बयान में आगे कहा गया है कि कंपनी नई ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसियों के माध्यम से सभी एयरलाइनों को बिना किसी रुकावट के निर्बाध सेवा प्रदान करना जारी रखेगी। मुंबई और अहमदाबाद एयरपोर्ट के प्रवक्ताओं ने कहा कि सीएसएमआईए और एसवीपीआईए में सेलेबी के सभी मौजूदा कर्मचारियों को उनकी मौजूदा शर्तों के आधार पर नई ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसियों में ट्रांसफर कर दिया जाएगा। हमारे हवाई अड्डों पर ग्राउंड हैंडलिंग संचालन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम सेवा और राष्ट्रीय हित के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। केंद्र सरकार द्वारा तुर्किये विमानन फर्म की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के बाद इन रियायत समझौतों को समाप्त करने का निर्णय लिया गया। इससे पहले अदाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स ने तुर्किये की कंपनी ड्रैगनपास के ग्राहकों को अपने एयरपोर्ट लाउंज की सुविधा का लाभ लेने के लिए कंपनी के साथ अपना समझौता रद्द कर दिया था। यह कदम भारत-पाकिस्तान संघर्ष के बीच तुर्किये की ओर से लगातार पाकिस्तान को मिल रहे समर्थन को देखते हुए उठाया गया।

मुजफ्फरनगर बुलेटिन कार्यालय पर आज 11:30 बजे छात्र-छात्राएं करेंगे अपना अनुभव साझा

आज बुलेटिन कार्यालय पर सीबीएसई बोर्ड के 12 वीं केविद्यार्थी अपने अच्छे अंक आने का अनुभव करेंगे साझा, छात्र-छात्राओं के लिए यह अनुभव उनके काम आने वाला अनुभव होगा। होनहार छात्र बताएंगे कि किस तरह उन्होंने टॉपर्स लिस्ट में शामिल होने के लिए क्या नियम अपनाए और क्या त्याग किया ?

कौन से विषयों में वो कमजोर थे, किस तरह से उन्होंने उन विषयों पर और ध्यान देकर अपने को निपुण किया और टॉपर्स सूची में शामिल हुए।

दिल्ली-एनसीआर में दमघोंटू हुई हवा, ग्रेप-1 की पाबंदियां लागू

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण परेशान करने लगा है। धूल भरी आंधी के बाद शुक्रवार को दिल्ली-एनसीआर में धूल की एक मोटी परत छा गई, जिससे हवा कम हो गई और वायु गुणवत्ता में गिरावट आ गई। एनसीआर में हवा बहुत खराब स्थिति में पहुंच गई है, जिसके चलते ग्रेडेड रेस्पॉन्स एक्शन प्लान के पहले चरण यानी स्टेज-1 को तुरंत प्रभाव से लागू करने का फैसला किया गया है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने गंभीर रुख अपनाते हुए इसे लेकर आदेश जारी किया है, ताकि प्रदूषण की स्थिति और न बिगड़े और वक्त रहते रोकथाम हो सके। बता दें कि ग्रेप-1 तब लागू होता है, जब शहर का एक्यूआई 200 के पार पहुंच जाता है।

इन चीजों पर लगा बैन-

- इस चरण में खुले में कचरा जलाने पर बैन, डीजल जनरेटर का सीमित उपयोग।
- रेस्टोरेंट में कोयले या जलाऊ लकड़ी के उपयोग पर बैन।

ग्रेप-1 पाबंदियों के तहत निर्माण गतिविधियों पर कुछ पाबंदियां लगाई जाती हैं।

- कचरा जलाने पर पूरी तरह रोक रहेगी और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दिया जाएगा।
- खुले में कूड़ा जलाना, सड़कों पर धूल उड़ना और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर भी निगरानी बढ़ाई जाएगी।

अखिलेश यादव का आरोप, सरकारी खा गयी विवाह का भोजन

वाराणसी, 16 मई (एजेंसी)। वाराणसी के हरहुआ क्षेत्र स्थित एक इंटर कॉलेज में सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, लेकिन इस दौरान वायरल वीडियो के आधार पर यह दावा किया जा रहा है कि विवाह के बाद स्टॉल पर खाना न मिलने की वजह से कार्यक्रम में आए लोग नाराज हो गए और उन्होंने जमकर हंगामा किया। इस कार्यक्रम में बीजेपी के स्थानीय नेता, विधायक भी मौजूद थे। अब इस मामले को लेकर अखिलेश यादव ने प्रदेश सरकार को भ्रष्टाचार के मामले में घेरते हुए तंज भी कसा है। दरअसल वाराणसी के ग्रामीण क्षेत्र हरहुआ स्थित एक इंटर कॉलेज में प्रदेश सरकार के दिशा निर्देश पर सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें बीजेपी के स्थानीय विधायक और पदाधिकारी भी मौजूद थे। सैकड़ों की संख्या में मौजूद वर वधु का विवाह संपन्न कराया जा रहा था, तभी विवाह के बाद खाना खाने के लिए स्टॉल पर लोग पहुंचें। इस दौरान बहुत से लोगों को वहां पर खाना नहीं मिला, जिसकी वजह से वह काफी नाराज हो गए. इस दौरान भारी भीड़ की भी तस्वीर वायरल वीडियो में देखी जा रही है, जिसमें कार्यक्रम में आए लोग भारी मस्कत करते हुए, खाना लेने के लिए जूझते नजर आ रहें है। इस दौरान भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय नेता, विधायक पदाधिकारी भी मौजूद थे. हालांकि बीडीओ बी. पी.वर्मा का इस मामले पर स्पष्ट कहना है कि सब कुछ सामान्य रहा है। इस कार्यक्रम में विधायक रविंद्र जायसवाल, विधायक टी. राम, विधायक हंसराज विश्वकर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या भी मौजूद रही। वाराणसी के इस मामले को लेकर अब अखिलेश यादव ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से भारतीय जनता पार्टी को घेरा है। भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए अखिलेश यादव ने बड़ा बयान देते हुए कहा है कि - भ्रष्टाचार के लिए भाजपाइयों का पेट सुरसा के मुंह जैसा है।

गीतकार गुलजार, जगद गुरु रामभद्राचार्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार, राष्ट्रपति ने किया सम्मानित

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने आज शुक्रवार को लोकप्रिय कवि और गीतकार गुलजार को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। उनके अलावा संस्कृत विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य को भी यह पुरस्कार दिया गया। राष्ट्रपति ने नई दिल्ली में साल 2023 के लिए यह 58वां ज्ञानपीठ पुरस्कार इन दोनों हस्तियों को दिया। गीतकार गुलजार और जगतगुरु रामभद्राचार्य, दोनों को साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। बता दें कि गुलजार का असली नाम संपूर्ण सिंह कालरा है। गुलजार हिंदी सिनेमा में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। वे इस युग के सबसे बेहतरीन उर्दू कवियों में से एक माने जाते हैं। हालांकि, गुलजार स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण समारोह में शामिल नहीं हो सके। चित्रकूट में तुलसी पीठ के संस्थापक और प्रमुख 75 वर्षीय रामभद्राचार्य नामी हिंदू आध्यात्मिक गुरु, शिक्षक और चार महाकाव्यों सहित 240 से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों के लेखक हैं।

संस्कृत विद्वान रामभद्राचार्य को एक प्रशस्ति पत्र, नकद पुरस्कार और वाग्देवी सरस्वती की एक कांस्य प्रतिकृति प्रदान की गई। पुरस्कार समारोह में बोलते हुए राष्ट्रपति मुर्मु ने संस्कृत साहित्य और समाज में रामभद्राचार्य के योगदान की सराहना की। राष्ट्रपति मुर्मु ने 90 वर्षीय गुलजार को भी बधाई दी। साथ ही उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

बिहार कैबिनेट के बड़े फैसले: ऑपरेशन सिंदूर के शहीदों को 50 लाख मुआवजा

पटना, 16 मई (एजेंसी)। सीएम नीतीश की अध्यक्षता में राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक में कई अहम फैसलों को मंजूरी दी गई। कुल 69 एजेंडों पर मुहर लगाई गई। इनमें ऑपरेशन सिंदूर में शहीद होने वाले जवानों के परिजनों को मुआवजा, गया शहर का बदला नाम, जीविका बैंक और जन्म-मृत्यु निबंधन का जिम्मा जैसे महत्वपूर्ण निर्णय शामिल हैं। कैबिनेट बैठक में एक ऐतिहासिक फैसला लेते हुए ऑपरेशन सिंदूर में शहीद हुए बिहार के जवानों के परिजनों को 50 लाख रुपये मुआवजा देने की योजना को स्वीकृति दी गई। यह अनुग्रह अनुदान गृह विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार, नई योजना के तहत दिया जाएगा। सरकार का मानना है कि इससे शहीदों के बलिदान को सम्मान और उनके परिवार को राहत मिलेगी। राज्य सरकार ने गया का नाम बदलकर गयाजी करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। यह निर्णय गयाजी के धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए लिया गया है। सरकार का मानना है कि नाम परिवर्तन से इसकी पौराणिक पहचान और धार्मिक पर्यटन को नई पहचान मिलेगी।

एडीजी मेरठ जोन व डीआईजी ने खालापार थाने का निरीक्षण किया

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। मेरठ जोन के एडीजी, सहारनपुर रेंज के डीआईजी ने जनपद के पुलिस अधिकारियों के साथ जुमे की नमाज व आने वाले ईद पर्व को लेकर खालापार थाना क्षेत्र में भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया। उन्होंने अधीनस्थों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

जुमे की नमाज व आने वाले ईदोत्सव को जनपद में सकुशल सम्पन्न कराने, आपसी सौहार्द बनाये रखने तथा कानून व्यवस्था सुदृढ़ बनाए रखने के लिए एडीजी मेरठ जोन भानु भास्कर, सहारनपुर रेंज के डीआईजी अभिषेक सिंह व एसपी सिटी सत्यनारायण प्रजापत द्वारा शुक्रवार को पुलिस बल के साथ थानाक्षेत्र खालापार में भ्रमण करते हुए सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया और खामियों को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। इसके अलावा अधीनस्थ अधिकारियों को धार्मिक स्थल व ईदगाह का निरीक्षण करते हुए धर्मगुरूओं एवं स्थानीय लोगों से वार्ता की।

अधिकारियों द्वारा ड्यूटी प्वाइंट पर तैनात पुलिसबल को सतर्क दृष्टि रखते हुए ड्यूटी करने के निर्देश दिए। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश करने वाले असामाजिक तत्वों पर तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। अधिकारियों ने स्थानीय लोगों से आपसी भाईचारा बनाए रखने व सोशल मीडिया पर भ्रामक पोस्ट शेयर न करने की अपील की। निरीक्षण के दौरान सीओ सिटी राजू कुमार साव, सीओ मंडी रुपाली राय चौधरी, थाना प्रभारी खालापार महावीर सिंह चौहान सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओं का सिर कलम करके लाने वाले भाकियू बेदी के राहुल बेदी गिरफ्तार

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। श्रीनगर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा मारे गए 28 पर्यटकों की मौत के बाद मुजफ्फरनगर के टाउन हॉल मैदान में जन आक्रोश रैली का आयोजन किया गया था, जिसमें इत्तेफाकन भाकियू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश टिकैत की पगड़ी एक व्यक्ति का हाथ लगने से गिर गयी थी। राकेश टिकैत को इस रैली में देखकर हिन्दू संगठनों में आक्रोश फैल गया था। बामुश्किल टिकैत को पुलिस कस्टडी में पीछे के दरवाजे से सुरक्षित निकाला गया था, जिसके बाद अगले ही दिन भाकियू ने किसान सम्मान रैली के नाम पर जीआईसी मैदान में एक रैली का आयोजन किया था, जहां वक्ताओं ने जो मुंह में आया वही कह डाला। एक ओर कैराना सांसद इकरा हसन ने हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओं की तुलना आतंकियों से की थी, उनका बयान भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ था मगर दमदार सांसद होने के नाते प्रशासन उन पर किसी प्रकार का कोई

मुकदमा दर्ज नहीं कर पाया था। इसी क्रम में भाकियू बेदी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल बेदी ने भी ओवैसी की तरह दस मिनट का समय मांगा था और जोश में आकर यह कह दिया था कि अगर राकेश टिकैत कहें तो हिन्दू संगठनों के कार्यकर्ताओं का सिर कलम करके ले आएंगे। उक्त बयान सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद प्रशासन जाग गया और अगले ही दिन राहुल बेदी पर मुकदमा दर्ज किया गया था। इसके 12 दिन बाद आज सहारनपुर पुलिस ने हिन्दू संगठनों को धमकी देने के आरोपी भाकियू बेदी के अध्यक्ष राहुल बेदी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। उसकी गिरफ्तारी होने के बाद अब हिन्दू संगठन इकरा हसन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का इंतजार कर रहे हैं।

लूट, डकैती की वारदात को अंजाम देने वाले गिरोह के दो बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। हिमाचल प्रदेश में लूट व डकैती की घटनाओं को अंजाम देने वाले गिरोह के दो बदमाशों को जानसठ पुलिस ने मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उनके पास से हिमाचल में डाली गयी डकैती के साथ भोपा व ककरौली थाना क्षेत्र में हुई चोरी की वारदातों के जेवरात बरामद किए हैं। बरामद जेवरातों की कीमत लगभग 12 लाख रुपए आंकी गयी है। पुलिस ने बताया कि इस गैंग के तीन बदमाशों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

एसपी देहात आदित्य बंसल ने पुलिस लाइन में प्रेसवार्ता करते हुए बताया कि गुरूवार रात जानसठ पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान बदमाश सरताज उर्फ भूरा निवासी पलड़ी थाना शाहपुर, हाल निवासी शफीपुर पट्टी बुढ़ाना, सलमान निवासी नसीरपुर, थाना नई मंडी को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए दोनों बदमाश अपने साथियों के साथ गोवा, हिमाचल प्रदेशों के साथ-साथ अन्य राज्यों में लूट, डकैती व चोरी की वारदातों को अंजाम दे चुके हैं। इस गिरोह के तीन बदमाशों को पुलिस पहले की मुठभेड़ में गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। इसी गिरोह ने हिमाचल प्रदेश के मंडी में डकैती की वारदात को अंजाम दिया था और वारदात के बाद वहां से चोरी की बाइक को लेकर भाग आए थे। इस गिरोह की तलाश में हिमाचल पुलिस भी लगी थी। पुलिस ने बदमाशों के पास से 12 लाख रुपए के जेवरात बरामद किए गए हैं। उन्होंने बताया कि बदमाश सरताज पर मुजफ्फरनगर व हिमाचल में सात मुकदमे दर्ज हैं, जबकि सलमान पर हिमाचल व जनपद के विभिन्न थानों में छह मुकदमे दर्ज हैं। यह

गिरोह दूसरे राज्य में वारदात करने के बाद जनपद में आकर मजदूरी व अन्य काम करने लगते हैं, जिससे पुलिस को इन पर संदेह न हो। सरताज व सलमान हिमाचल की मंडी में पड़ी डकैती की घटना में भी वांछित चल रहे थे। वहां की पुलिस को दोनों के बारे में जानकारी दे दी गई है। पूरे गिरोह पर गैंगस्टर की कार्रवाई की जाएगी।

मंत्री अनिल कुमार और विधायक मिथलेश पाल के मामलों की सुनवाई अब 28 मई को

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। कैबिनेट मंत्री अनिल कुमार के विरुद्ध कोर्ट में विचाराधीन मामले में शुक्रवार को वादी मुकदमा ने कोर्ट में पहुंचकर अपनी गवाही दी। कोर्ट ने मामले में सुनवाई के लिए 28 मई की तिथि नियत की है। कैबिनेट मंत्री की तरफ से कोर्ट में हाजिरी माफी दी गयी थी, वहीं विधायक मिथलेश पाल के मामले में भी कोर्ट में सुनवाई नहीं हो सकी। इस

मामले में 28 मई की तिथि नियत की गयी है। कैबिनेट मंत्री अनिल कुमार समेत अन्य के खिलाफ वर्ष-2022 में छपार थाना क्षेत्र के गांव खामपुर में बिना अनुमति के जनसभा करने के मामले में आचार संहिता उल्लंघन की रिपोर्ट दर्ज की गयी थी। इस मामले की सुनवाई एसीजेएम प्रथम की कोर्ट में चल रही है। बचाव पक्ष के अधिवक्ता किरण पाल ने बताया कि शुक्रवार को वादी मुकदमा दरोगा आरएस राणा ने कोर्ट में पहुंचकर अपने बयान दर्ज कराए हैं। मामले में कैबिनेट मंत्री की तरफ से हाजिरी माफी दी गयी थी। इसके अलावा वर्ष 2019 में धनगर जाति के प्रमाण पत्र को लेकर जीआईसी मैदान में भीड़ एकत्रित की गई थी, जिसमें विधायक मिथलेश पाल समेत 13 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गयी थी। इस मामले की सुनवाई भी एसीजेएम प्रथम कोर्ट देवेन्द्र फौजदार की कोर्ट में चल रही है। कोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई नहीं हो सकी। मामले में सुनवाई के लिए 28 मई की तिथि नियत की गयी है।

अमरनाथ यात्रा के लिए 3.5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने कराया ऑनलाइन पंजीकरण

जम्मू 16 मई (वार्ता) भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव धीरे-धीरे सामान्य होने और सीमा पर गोलाबारी बंद होने पर जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने आगामी तीन जुलाई से शुरू होकर 09 अगस्त तक चलने वाली श्री अमरनाथ यात्रा के लिए तीर्थयात्रियों के स्वागत की तैयारी शुरू कर दी है और अब तक पूरे देश से 3.5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया है। प्रशासन ने शुक्रवार को कहा कि जम्मू में 2000 तीर्थयात्रियों की क्षमता वाले यात्री निवास का कायाकल्प किया जाएगा और जून के मध्य तक यह यात्रियों के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो जाएगा।

बचन सिंह कॉलोनी में छात्र को गोली मारने के तीन आरोपी गिरफ्तार

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। नई मंडी कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला बचन सिंह कालोनी में छात्र को गोली मारने के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। मामले के कई आरोपी अभी भी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश कर रही है। आपको बता दें कि मौहल्ला बचन सिंह कॉलोनी में बाइक सवार हमलावरों ने छात्र यश शर्मा को घर से बुलाकर गोली मार दी थी, इतना ही नहीं छात्र को गोली मारने से पहले हमलावरों ने समर निवासी बचन सिंह कालोनी पर भी फायर झोंका था, जिसमें वह बाल-बाल बच गया। पुलिस ने हमलावरों के खिलाफ दो मामले दर्ज किए थे। थाना प्रभारी दिनेश चंद्र बघेल ने बताया कि छात्र व एक अन्य पर गोली चलाने वाले के मामले में आरोपी आकाश, अर्जुन व कुणाल निवासीगण कूकड़ा को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों के साथ उनके साथी अमन ने छात्र को तमंचे से गोली मारी दी। पुलिस उसकी व अन्य साथियों की तलाश कर रही है।

बुलंदशहर में ट्रक कैंटर में टक्कर तीन मरे 27 घायल

बुलन्दशहर 16 मई (वार्ता) उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर जिले के जहांगीराबाद क्षेत्र में शुक्रवार सुबह कैंटर और ट्रक के बीच हुई टक्कर में तीन लोगों की मृत्यु हो गई जबकि 27 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस अधीक्षक देहात तेजवीर सिंह ने बताया कि आज सुबह करीब पांच बजे जहांगीराबाद बुलंदशहर मार्ग पर एक कैंटर पंजाब के कस्बा मौडा से सवारियां लेकर शाहंजहांपुर-हरदोई जा रहा था कि कस्बा जहांगीराबाद क्षेत्र के निकट चालक को झपकी आ गई और उसका वाहन आगे चल रहे ट्रक से टकरा गया। उन्होंने बताया कि कैंटर में 36 सवारियां बैठी हुई थी। जिनमे 34 को घायल हालत में बाहर निकाला गया। इनमे से तीन की मृत्यु हो गयी। चार घायलों को जिला अस्पताल बुलंदशहर तथा 27 गम्भीर रूप से घायलो को मेरठ मेडिकल कालेज उपचार के लिये भेजा गया है।

गर्मी की दस्तक के बीच नगर में पेयजल आपूर्ति बनी समस्या

मुजफ्फरनगर, 16 मई (बु.)। भीषण गर्मी की दस्तक के बीच जिम्मेदार अफसरों की उपेक्षा के चलते नगरीय क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति व पानी के संसाधन दुरुस्त करने में पालिका विफल साबित हो रही है। इसके चलते पेयजल आपूर्ति शहर के कई इलाकों में बाधित होने से लोगों की दिनचर्या प्रभावित हो रही है। ऐसी स्थिति में मिमलाना रोड पर कई दिनों से पेयजल आपूर्ति बाधित होने से परेशान महिलाओं ने अपने बच्चों के साथ टाउनहाल में पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। हालांकि इस बीच नगर पालिका में कोई अधिकारी न होने से उन्हें परेशान होना पड़ा। नगरीय क्षेत्र में गर्मी की दस्तक के बीच पेयजल आपूर्ति बुरी तरह से प्रभावित होने लगी है। हैंडपम्प या वाटर कूलर की बात तो कोसों दूर की बात, पानी की टंकी लोगों को मुंह चिढ़ा रही हैं। नगर के मौहल्ला लद्दावाला, महमूदनगर, सरवट, मिमलाना रोड, रामपुरी, खालापार समेत कई अन्य क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति प्रभावित होने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उक्त समस्या से जूझ रहे मिमलाना रोड पर मंदिर वाली गली के कई परिवार कई दिनों से पेयजलापूर्ति नहीं होने से आहत हैं। शुक्रवार में इस समस्या निदान की मांग को लेकर दर्जनों महिलाएं अपने बच्चों को लेकर टाउनहाल पहुंची और कई जगह जाकर पानी नहीं आने की परेशानी को लेकर अपनी शिकायत दर्ज कराई। इस बीच पालिका में उन्हें वहां कोई अधिकारी नहीं मिला। ईओ कार्यालय पर इन महिलाओं ने प्रदर्शन करते हुए बताया कि बीते कई दिनों से गली में पानी की आपूर्ति नहीं हो रही है। इस दौरान महमूदनगर निवासी अरशद अब्बासी ने बताया कि चार दिनों से टंकियों में पानी नहीं आ रहा। भीषण गर्मी में पानी न आने से लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि कई दिनों तक केवल शाम को ही पानी आ रहा था, लेकिन अब दो दिनों से वो भी बंद है। उधर, लद्दावाला निवासी जीशान मलिक ने बताया कि कई दिनों से आपूर्ति बाधित है। पालिका में पहुंचे लोगों ने पालिकाध्यक्षा से उक्त समस्या के समाधान की मांग की।

इन्होंने कहा- जलकल विभाग जेई जितेन्द्र सैनी ने बताया कि क्षेत्र में सभी नलकूपों को पूरी क्षमता के साथ तय समय में चलाया जा रहा है। जनरेटरों का प्रयोग विद्युत आपूर्ति बंद रहने पर किया जा रहा है। कुछ क्षेत्रों पर लाइन में प्रेशर कम होने के कारण पानी नहीं पहुंच पाने की शिकायत प्का समाधान किया जा रहा है। कई क्षेत्रों से आज भी शिकायत आने पर काम किया गया है।

ईओ डॉ. प्रज्ञा सिंह ने बताया कि कुछ क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति बाधित होने के संबंध में उन्हें शिकायत प्राप्त हुई है। उनके द्वारा जलकल एई एवं जेई को टीमों के साथ इन समस्याग्रस्त क्षेत्रों का भ्रमण कर रिपोर्ट देने के लिए कहा गया है। उन्होंने बताया कि पाइपलाइन में प्रेशर कम रहने तक टेल वाले क्षेत्रों में पानी नहीं पहुंचने की शिकायत बन रही है। उनको प्रेशर ठीक कराने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि गर्मी में पेयजलापूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

सिविल इंजीनियर के आत्महत्या के मामले में तीन के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज

मुजफ्फरनगर, 16 (बु.)। सिविल इंजीनियर के आत्महत्या प्रकरण में जीआरपी थाने में रूम पार्टनर समेत तीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गयी है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। वहीं गमगीन माहौल में परिजनों द्वारा सिविल इंजीनियर का अंतिम संस्कार कर दिया गया। आपको बता दें कि नई मंडी के क्षेत्र के मौहल्ला आदर्श कॉलोनी निवासी उदित ने गुरूवार को रेलवे स्टेशन के पास शालीमार एक्सप्रेस ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली थी। पुलिस द्वारा जब मृतक की तलाशी ली गयी तो उसकी जेब से सुसाइड नोट मिला था, जिसमें नोएडा के तीन लोगों को मौत के लिए जिम्मेदार बताया था। सिविल इंजीनियर उदित के भाई संदीप ने जीआरपी थाने में तीनों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि उसका भाई नोएडा में काम करता था। उसने आरोप लगाया कि बिल्डिंग के मालिक नरेश राणा निवासी सेक्टर-66 नोएडा, शिवम त्रिपाठी निवासी गौतमबुद्धनगर और असजद असरार निवासी मसूरा गली नम्बर-2 गौतमबुद्धनगर ने चोरी का आरोप लगाकर उदित को प्रताड़ित किया था। यही नहीं 50 हजार रुपए की मांग करते हुए बंधक बनाकर उसके साथ मारपीट की थी। उसे जबरदस्ती शराब पिलाकर घटना को स्वीकार कराकर उसका वीडियो बनाया। इसी प्रताड़ना से आहत होकर उसके भाई ने आत्महत्या कर ली। जीआरपी ने तीनों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। आरोपी शिवम त्रिपाठी उसके साथ रूम पार्टनर था, जिसने लैपटॉप चोरी का आरोप उसके भाई पर लगाया था।

स्वास्थ्य विभाग टीम ने अवैध रूप से चल रहा अस्पताल किया सील

खतौली, 16 (बु.)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा अपंजीकृत अस्पतालों के विरुद्ध चलाए गए अभियान के अन्तर्गत क्षेत्र में एक अपंजीकृत क्लीनिक के विरुद्ध चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अवनीश सिंह द्वारा सील करने की कार्यवाही की गयी। जिलाधिकारी उमेश कुमार व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुनील तेवतिया के निर्देशानुसार चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अवनीश कुमार सिंह के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग टीम क्षेत्र में क्लीनिकों के विरुद्ध विशेष जांच अभियान चलाया गया। इस दौरान खतौली ग्रामीण क्षेत्र के गांव शेखपुरा रोड स्थित एक अपंजीकृत क्लीनिक पर छापामारी के दौरान चिकित्सक द्वारा कोई वैध पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रस्तुत न किये जाने तथा चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अवनीश सिंह के नेतृत्व में विभागीय टीम द्वारा क्लीनिक पर सील लगाने की कार्यवाही करते हुए नोटिस जारी किया गया। इस अवसर पर

डॉ. अवनीश कुमार सिंह ने कहा कि फर्जी स्वास्थ्य सेवाओं के नाम से इलाज के नाम पर मानव जीवन से खिलवाड़ करने वालों के विरुद्ध निरंतर अभियान जारी रहेगा। उन्होंने नागरिकों से भी ऐसी फर्जी चिकित्सकों की सूचना तत्काल स्वास्थ्य विभाग को देने का आह्वान करते हुए केवल पंजीकृत क्लीनिकों में उपचार कराने की अपील की।

90 मीटर का थ्रो करने के बावजूद दूसरे स्थान पर रहे नीरज चोपड़ा

नई दिल्ली, 16 मई (एजेंसी)। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने दोहा डायमंड लीग में शानदार प्रदर्शन किया और अपने जीवन में पहली बार 90 मीटर का थ्रो किया। बावजूद इसके भी नीरज डायमंड लीग का दोहा चरण नहीं जीत सके। नीरज चोपड़ा को जर्मनी के जूलियन वेबर ने हराया, जिन्होंने छठे प्रयास में 91.06 मीटर का थ्रो किया, जबकि नीरज 90.23 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ दूसरे स्थान पर रहे। नीरज सबसे पहले थ्रो करने आए और उन्होंने पहले ही

प्रयास में 88.44 मीटर का थ्रो किया। वहीं, उनके प्रतिद्वंद्वी एंडरसन पीटर्स ने पहले प्रयास में 85.64, जूलियन वेबर ने 83.82 और जूलियस येगो ने 68.81 मीटर का थ्रो किया। भारत के एक अन्य भाला फेंक एथलीट किशोर जेना ने पहले प्रयास में 68.07 मीटर के थ्रो के साथ शुरूआत की। इस तरह नीरज पहले प्रयास में सबसे आगे रहे।

एसडीएम को भूमि स्वामित्व घोषित करने का अधिकार नहीं: इलाहाबाद हाईकोर्ट

प्रयागराज, 16 मई (एजेंसी)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में कहा है कि उप जिलाधिकारी को एक व्यक्ति को किसी भूखंड का भूमिधर घोषित करने का कोई अधिकार नहीं है। अदालत ने कहा कि इस तरह के पहलू पर एसडीएम द्वारा न्यायिक निर्णय 2006 की संहिता की धारा 144 के तहत किए जाने की जरूरत है, जहां राज्य और ग्राम पंचायत आवश्यक पक्षकार होंगे। उक्त टिप्पणी न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र ने जयराज सिंह नामक व्यक्ति द्वारा दायर रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए की। जयराज सिंह ने एसडीएम को उसके पक्ष में भूमिधरी अधिकार देने का निर्देश देने की अदालत से गुहार लगाई थी क्योंकि याचिकाकर्ता लंबे समय से उक्त जमीन पर काबिज था। उत्तर प्रदेश जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधिनियम और उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता के प्रावधानों पर गौर करने के बाद अदालत ने कहा कि एसडीएम या किसी अन्य अधिकारी को प्रशासनिक स्तर पर यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वह संबंधित भूमिधारक को भू-स्वामी घोषित कर दे।

शराबी ने पत्नी को छत से उल्टा लटकाया

बरेली, 16 मई (वार्ता) बरेली स्थित आंवला तहसील लठैता मोहल्ले में एक दिल दहला देने वाली घटना हुई। एक शराबी युवक ने दो दिन पहले पहले पत्नी को बेरहमी से पीटा और फिर उसे छत से उल्टा लटकाकर जान से मारने की कोशिश की थी। शोर शराबा सुनकर आसपास से लोग आ गए किसी तरह महिला को बचाया। पुलिस ने इस मामले में चार लोगों पर एफआईआर दर्ज कराई है। घटनाक्रम संबंधी वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जो काफी डरावना है। आरोपी फरार हो गया है। जिसकी तलाश हो रही है। एक शराबी युवक ने पहले पत्नी को बेरहमी से पीटा और फिर उसे छत से उल्टा लटकाकर जान से मारने की कोशिश की। मोहल्ले वालों ने समय रहते महिला को पकड़कर उसकी जान बचा ली। यह पूरी घटना एक पड़ोसी ने मोबाइल में रिकॉर्ड कर ली, वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

उत्तर प्रदेश में नकली दवाओं पर योगी सरकार की बड़ी कार्रवाई : 30 करोड़ की जब्ती, 1166 लाइसेंस रद्द

लखनऊ, 16 मई (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने नकली दवाओं के कारोबार पर नकेल कसते हुए वर्ष 2024-25 में व्यापक स्तर पर कार्रवाई की है। इस अभियान के तहत अब तक 30 करोड़ रुपये मूल्य की 77 प्रकार की नकली दवाएं जब्त की जा चुकी हैं। नकली दवाओं के कारोबार से जुड़े 68 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि 1166 मेडिकल स्टोर और थोक व्यापारियों के लाइसेंस निरस्त कर दिए गए हैं। एफएसडीए अधिकारियों ने इन आंकड़ों की जानकारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दी है। अभियान की समीक्षा बैठक के दौरान यह भी बताया गया कि इस कार्रवाई का उद्देश्य जनता को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण दवाएं उपलब्ध कराना है, और साथ ही दवा माफियाओं को समाप्त करना है। अधिकारियों के मुताबिक नकली दवा कारोबार के विरुद्ध सबसे बड़ी कार्रवाइयाँ आगरा, लखनऊ और गाजियाबाद जैसे बड़े शहरी क्षेत्रों में की गईं। आगरा में नवंबर 2024 में की गई एक छापेमारी के दौरान 1.36 करोड़ रुपये की नकली दवाएं जब्त की गईं। वहीं गाजियाबाद में फरवरी 2025 में 90 लाख रुपये की नारकोटिक्स दवाएं जब्त की गईं। राजधानी लखनऊ में स्पेशल टास्क फोर्स की मदद से चलाए गए विशेष अभियानों में ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन और कई प्रकार की नकली

एलोपैथिक दवाएं जब्त की गईं। एफएसडीए ने बताया कि 2024-25 में पूरे प्रदेश में कुल 1039 छापेमारी अभियान चलाए गए। इन अभियानों के दौरान 13,848 दवाओं और कॉस्मेटिक उत्पादों के नमूने लिए गए। 463 दवा निर्माण इकाइयों का निरीक्षण किया गया। 647 ब्लड बैंकों की जांच की गई। 10,462 बिक्री प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर कार्रवाई की गई। एफएसडीए की रिपोर्ट के अनुसार,1166 दवा व्यापारियों के लाइसेंस निरस्त किए गए। 68 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। छह दवा निर्माण इकाइयों और पांच ब्लड बैंकों के लाइसेंस भी निरस्त कर दिए गए हैं, जिन 77 प्रकार की नकली दवाओं को जब्त किया गया, उनमें कई महत्वपूर्ण जीवन रक्षक दवाएं, एंटीबायोटिक्स, पेन किलर, और हॉर्मोन आधारित इंजेक्शन (जैसे ऑक्सीटोसिन) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त कई नकली कॉस्मेटिक उत्पाद और नशीली दवाएं भी जब्त की गई हैं। बरेली में अप्रैल 2025 में 50 लाख रुपये मूल्य की नकली कॉस्मेटिक उत्पादों की खेप पकड़ी गई। इसके अलावा वाराणसी, मेरठ और कानपुर में भी कई छापेमारी अभियानों के दौरान नकली दवाएं जब्त की गईं। एफएसडीए की जांच में यह भी सामने आया कि कुछ मामलों में आयुर्वेदिक दवाओं की आड़ में नकली एलोपैथिक दवाएं बेची जा रही थीं। ऐसे 14 नमूनों की जांच अभी जारी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस अभियान की प्रशंसा करते हुए एफएसडीए को और सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि नकली दवाओं का धंधा मानवता के खिलाफ अपराध है और इसमें शामिल किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने इस्कॉन-बेंगलुरु को शहर के राधा कृष्ण मंदिर का वैध मालिक घोषित किया

नई दिल्ली, 16 मई (वार्ता) उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कर्नाटक उच्च न्यायालय का एक फैसला पलटते हुए इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) सोसाइटी बेंगलुरु को दक्षिण भारत के इस शहर के हरे कृष्ण हिल पर स्थित इस्कॉन मंदिर का वैध मालिक घोषित कर दिया। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ए जी मसीह की पीठ ने इस्कॉन-बेंगलुरु की कानूनी और प्रशासनिक स्वायत्तता की पुष्टि करते हुए कहा कि सोसाइटी श्री राधा कृष्ण मंदिर की वैध मालिक है। इस्कॉन-मुंबई इसके मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। पीठ ने उच्च न्यायालय के पहले के फैसले को खारिज कर दिया जिसमें इस्कॉन-मुंबई को संपत्ति का वैध मालिक घोषित किया गया था। अदालत ने इस्कॉन बैंगलोर की स्वतंत्र और वैध इकाई की स्थिति को बरकरार रखा है। इस्कॉन सोसाइटी बेंगलुरु कर्नाटक सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम के तहत पंजीकृत एक सोसाइटी है। शीर्ष अदालत के इस फैसले ने इस्कॉन-बेंगलुरु

और इस्कॉन-मुंबई के बीच लंबे समय से चले आ रहे स्वामित्व और प्रबंधन विवाद को खत्म कर दिया। विवाद की जड़ें इस्कॉन के भीतर आंतरिक मतभेदों में निहित हैं, जो इसके संस्थापक सदस्य श्रील प्रभुपाद के निधन के बाद शुरू हुई थी। वर्ष 1981 में स्थापित इस्कॉन-बैंगलोर ने पश्चिमी अनुयायियों द्वारा नेतृत्व के उत्तराधिकार का विरोध किया था, जिसके कारण इस्कॉन-मुंबई के साथ मतभेद पैदा हो गए थे। यह मामला विभिन्न मंचों से होते हुए निचली अदालत, फिर उच्च न्यायालय और अंत में शीर्ष अदालत पहुंचा।